वर्ष 45 अंक 9 सितम्बर 2018 ₹ 15/-

हंसती दुनिया

हँसती दुनिया

• वर्ष 45 • अंक 9 • सितम्बर 2018 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कॉलोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**
सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. ममतामयी माँ
   सविन्दर हरदेव जी महाराज
22. क्या आप जानते हैं?
32. पहेलियां
33. अनमोल वचन
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

9. **पढ़कर मौज मनाते**
: राजकुमार जैन 'राजन'

21. **उतने गहरे हैं सागर**
: हरजीत निषाद

21. **चींटी का व्यवहार**
: कमलसिंह चौहान

26. **दादा-दादी, मम्मी-पापा**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

29. **हम सब वृक्ष लगायें**
: मदन देवड़ा

39. **शिक्षा**
: डॉ. सुरेश उजाला

39. **गुरु**
: ऋषिमोहन श्रीवास्तव

47. **करते जो उपकार**
: महेन्द्र सिंह शेखावत

47. **नन्हा पौधा बनता पेड़**
: गोविन्द भारद्वाज

कहानियां

16. **कैद से छुटकारा**
: अमर सिंह शौल

20. **देशभक्ति**
: रूपनारायण काबरा

20. **खुशहाली का सच्चा रास्ता**
: रूपनारायण काबरा

23. **संगत का असर**
: श्यामसुन्दर गर्ग

27. **निडर बालक मल्हारी**
: डॉ. विकास मानव

30. **मैं भी बचत करूंगा**
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

41. **अस्तित्व**
: किशनलाल शर्मा

42. **किसान और राजा**
: राजकुमार जैन

विशेष/लेख

10. **विश्व-समाज में बच्चों का स्थान**
: सी. एल. गुलाटी

18. **हिम तेंदुआ**
: डॉ. परशुराम शुक्ल

22. **अनोखा ज्वालामुखी पर्वत**
: ईलू रानी

24. **छछूंदर**
: पुष्पेश कुमार

38. **पढ़ें और बढ़ें**
: हरजीत निषाद

40. **मकड़ी**
: डॉ. विनोद गुप्ता

सही कदम-सही दिशा

कक्षा में अध्यापक पढ़ा रहे हैं और 'पीरियड' समाप्त होने लगा है, तभी एक विद्यार्थी ने कक्षा में प्रवेश की अनुमति मांगी और कहा "सर, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?"

अध्यापक ने समय देखा फिर इशारे से कहा 'हाँ' और विद्यार्थी आकर अपनी जगह पर बैठ गया। अपनी बात पूरी करने के पश्चात् अध्यापक ने उस विद्यार्थी से पूछा– तुम इतना लेट क्यों आए हो? विद्यार्थी ने उत्तर दिया– सर मैं घर से तो निश्चित समय से ही चला था फिर भी आने में देर हो गयी। मैं कुछ सोच रहा था और सोचते-सोचते मैं कहीं और ही पहुँच गया। फिर ध्यान आया कि मैं तो स्कूल जा रहा था और मैंने रास्ते का ख्याल ही नहीं किया और चलता गया इसलिए इतनी देर हो गयी।

अध्यापक ने उसकी बात सुनी और उसने कक्षा में अपने ढंग से अपनी बात को कहा– "हम सभी रोज कोई न कोई कार्य करते हैं और हर कार्य का अपना एक समय होता है, उसकी महत्ता होती है। जिस कार्य को हम जितना महत्व देते हैं उसको उतनी ही एकाग्रता से करते भी हैं इसीलिए जिस कार्य को हम एकाग्र होकर नहीं करते, उस कार्य को हम उतना महत्व भी नहीं देते जितना हमें देना चाहिए।

हमें सबसे पहले यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हमें आज करना क्या है? हमारी प्राथमिकता के अनुसार ही हमारा निर्णय होना चाहिए। फिर उस निर्णय को एकाग्र मन से पूरा करने की चेष्टा करनी चाहिए। कोई भी भटकाव चाहे किसी तरह का भी हो उसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। इसलिए अगर हमारा पहला कदम ही गलत पड़ जाता है तो हमारा पूरा कार्य होने से पहले ही अधूरा होने की दिशा में उलझ कर रह जाता है।" 'पीरियड' समाप्त हुआ और अध्यापक ने वहीं अपनी बात समाप्त कर दी।

प्यारे साथियों! आज चिन्तन का विषय यह है कि हमारी प्राथमिकता क्या है? क्या सच में हमें अपनी चाह या प्राथमिकता का बोध है? हम चाहते क्या हैं और कर क्या रहे हैं। हमारा तन कहाँ है और मन कहाँ है? क्या हमारा पहला कदम सही दिशा में है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमारे पास ही हैं इसके लिए बस हमें केवल अपने मन की आवाज़ अर्थात् अपने अन्तर्मन को सुनना है जो हमेशा उचित निर्णय ही देता है। फिर भी हमारे माता-पिता, शिक्षक, गुरुजन हमारे सहयोगी होते हैं जो हमारा मार्गदर्शन करते रहते हैं।

"कमीज का पहला बटन ही गलत लग जाए तो बाकी सारे बटन भी गलत लगते जाते हैं।" यह शिक्षा सन्त निरंकारी मिशन के सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने अपने पहले प्रवचन में दी।

आप आगे भी इसी तरह हमारे मार्गदर्शक बनकर हमारी एकाग्रता शक्ति को अपनी शिक्षा से आगे बढ़ाते रहेंगे और ज्ञान की धारा को प्रवाहित करते रहेंगे।

हमारा पहला कदम ही ठीक उठेगा तो मंजिल स्वयं ही सामने दिखाई देना शुरू कर देगी।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 171

हंसां दी तूं रीस करें तें लुक लुक डड्डू खावें तूं।
अपणे मुंहों भौरा बणनैं गन्दी थां ते जावें तूं।
पा के केवल शेर दा चोला शेर दा नाम रखावें तूं।
पर जद अपणी बोली बोलें खोता फेर सदावें तूं।
पूरे गुर दी शरनीं आ जा जे कुझ बणना चाहवें तूं।
कहे अवतार मिले तां पदवी जे अपणा आप मिटावें तूं।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान को पद-पदवियां प्राप्त हो जाती हैं तो वह इनका अभिमान करता है। इन्सान जीवन में बहुत कुछ बनना चाहता है लेकिन अपने अहंकार के कारण वह कोई विशेष उपलब्धि हासिल नहीं कर पाता। इन्सान अपने-आपको सद्गुरु के चरणों में मिटाने की जगह अपने-आपको उजागर करने में लगा रहता है।

हंस के बारे में कहा जाता है कि हंस दूध का दूध और पानी का पानी करने की क्षमता रखता है लेकिन इन्सान की अवस्था हंस की बजाय बगुले की तरह है। बगुला छिप-छिपकर मेंढक खाता है परन्तु हंस की नकल करना चाहता है। हंस और बगुले दोनों के पंखों का रंग भले ही सफेद होता है लेकिन अपने व्यवहार और आचरण के कारण दोनों बहुत अलग होते हैं। जैसे गंदगी का कीड़ा (गुबरैला) और फूलों का रस पीने वाला भंवरा देखने में दोनों एक समान दिखाई देते हैं लेकिन दोनों के गुण एकदम अलग होते हैं। गंदगी का कीड़ा गंदगी खाने गंदी जगह पर जाता है और भंवरा सुगंध भरे फूलों का रस पीता है।

बाबा अवतार सिंह जी आगे बता रहे हैं कि इन्सान तेरी अवस्था उस गधे के समान है जो शेर की खाल ओढ़कर अपने-आपको शेर समझ कर घूम रहा है। भाव तू सच्चाई की जगह पर झूठ का सहारा लेकर चल रहा है। झूठ, झूठ ही होता है। अगर एक गधा शेर की खाल ओढ़कर झूठमूठ का शेर बनना चाहेगा तो इसका उसे कोई लाभ नहीं होगा बल्कि जब असली शेर से उसकी मुलाकात होगी तो वह मुश्किल में पड़ जाएगा। संसार में हंस और बगुला, शेर और गधे, गंदगी वाले कीड़े और भंवरे के समान सुगन्ध का आनन्द लेने वाले कितने ही जीव-जन्तु हैं और इनके समान ही अच्छे और बुरे आचरण वाले इन्सान भी हैं परन्तु इन्सान को अच्छा बनकर अच्छाई को ही अपनाना चाहिए।

बाबा अवतार सिंह जी और स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं कि हे इन्सान! असल की पहचान के बिना नकल पर आधारित जीवन का कोई अर्थ नहीं हैं। इन्सान अगर तू वास्तव में कुछ बनना चाहता है और तू ऊँची अवस्था प्राप्त करना चाहता है तो सद्गुरु की शरण में आकर सम्पूर्ण समर्पण करके अपने-आपको मिटा दे। इससे तुझे सच्ची और ऊँची पदवी प्राप्त हो जाएगी। भाव, तेरा आवागमन समाप्त हो जाएगा। तुझे जीवन का सर्वोच्च पद अर्थात् मुक्तिपद प्राप्त हो जायेगा।

ममतामयी माँ
सविन्दर हरदेव जी महाराज

"वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक है कि दुनिया का हर इन्सान खान–पान, रहन–सहन, रंग–नस्ल आदि की विभिन्नताओं को सहज रूप में स्वीकार करते हुए दया, करुणा, प्रेम और विशालता जैसे मानवीय गुणों से युक्त हो ताकि हर इन्सान के जीवन में आनन्द और सुख–शान्ति आए।"

'अनेकता में एकता' का सूत्र प्रदान करने एवं सम्पूर्ण धरा पर बसने वाले इन्सानों के लिए सुख–समृद्धि, आनन्द की स्थापना के लिए प्रयासरत सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज 17 मई 2016 को सद्गुरु रूप में प्रकट हुईं।

आपने अपनी अलौकिक दिव्य–वाणी से मानव–मात्र को अपने पहले ही सम्बोधन में यह भाव प्रकट करके कि 'कुछ भी हो केवल प्यार ही प्यार हो' सिद्ध कर दिया कि सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी ने जीवन भर सत्य–प्रेम, शान्ति–सद्भाव, परस्पर मधुर सम्बन्ध, विश्व–भ्रातृभाव का जो सन्देश दिया था, यह सद्गुरु भी उसी कल्याणकारी सन्देश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं।

माता सविन्दर जी का जन्म 12 जनवरी 1957 को यमुनानगर (हरियाणा) निवासी श्री मनमोहन सिंह जी एवं श्रीमती अमृत कौर जी के परिवार में हुआ। आपका लालन–पालन फर्रुखाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री गुरमख सिंह आनन्द जी और श्रीमती मदन कौर जी ने किया, जिन्होंने बचपन में ही आपको गोद ले लिया था। माता सविन्दर जी को बाल्यावस्था से ही पूज्य मदन जी और गुरमुख सिंह जी का स्नेह और ममत्व प्राप्त हुआ।

माता सविन्दर जी की प्रारम्भिक शिक्षा फरूर्खाबाद में ही हुई। तत्पश्चात् सन् 1966 में आपने आगे की शिक्षा जीजस एण्ड मेरी कान्वेंट स्कूल, मसूरी (उत्तराखण्ड) से ग्रहण की। सन् 1973 में आपने सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा आपने दिल्ली के दौलतराम कॉलेज से प्राप्त की।

14 नवम्बर 1975 को आपका विवाह निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी तथा निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर जी के सुपुत्र श्री हरदेव सिंह जी के साथ निरंकारी पद्धति से सादा रूप में सम्पन्न हुआ, जो बाद में निरंकारी मिशन के सद्गुरु के रूप में प्रकट हुए। आपकी तीन सुपुत्रियां हैं– समता जी, रेणुका जी एवं सुदीक्षा जी। तीनों का लालन–पालन आपने अपनी ममता की छाँव में पूर्ण जिम्मेदारी के साथ किया और गृहस्थी के सभी उत्तरदायित्वों को भलीभाँति निभाया।

विवाहोपरान्त वर्ष 1975 एवं 1976 में आप अपने पति श्री हरदेव सिंह जी के साथ, बाबा गुरबचन सिंह जी एवं निरंकारी राजमाता जी द्वारा की गई विश्व कल्याण यात्राओं में सहभागी रहीं। इस यात्रा में कुवैत, इराक, थाईलैण्ड, हांगकांग, कनाडा, यू.एस.ए, ऑस्ट्रिया एवं यू.के. देश सम्मिलित थे।

वर्ष 1980 में युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त उस समय के विपरीत एवं चुनौतीपूर्ण वातावरण में आपके पति श्री हरदेव सिंह जी को सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर सौंपी गई, तभी से पूज्य माता जी सद्गुरु की छाया बनकर

हर समय सद्गुरु के साथ कदम से कदम मिला कर चलती रहीं। सद्गुरु बाबा जी के साथ प्रबन्ध के कार्यों में भी आपने सदैव सहयोग किया। जनरल बॉडी मीटिंग्स में आप हमेशा सम्मिलित रहीं और प्रबन्धकीय सूझबूझ हासिल की। कल्याण यात्राएं हों या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, पूज्य माता जी ने हर समय सद्गुरु के साथ कदम से कदम मिला कर चलने का प्रयास किया। सदैव शान्त रहकर सबको प्यार और दुलार देना आपके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

आपके हृदय में दया और करुणा का भाव सदैव प्रबल रहा। आप सभी को सहनशीलता का पाठ पढ़ाती रहीं। खामोश रह कर गुरु भक्ति की प्रेरणा देते रहना, आपका स्वभाव था। इसी स्वभाव के कारण आप सदैव हर गुरसिख–सेवादार का हर प्रकार से ध्यान रखती थीं। पूज्य माता जी के हृदय में बच्चों के प्रति बेहद प्यार और दुलार था। अपना ममत्व लुटाने के लिए यह दिव्य–विभूति हर समय तत्पर रहती थीं तथा गुरसिखों के जीवन को सुन्दर और आदर्श रूप में देखना चाहती थीं।

माता सविन्दर जी हर क्षेत्र में महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रयासरत रहीं। समाज कल्याण कार्यों में जहां आपकी रुचि रही वहीं आप वृक्षारोपण व सिलाई–कढ़ाई केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बहनों के प्रति भी अपनत्व का भाव रखतीं। जेलों में कैदियों के जीवन में सुधार एवं आध्यात्मिक रूप से जाग्रत करने के लिए आप प्रयासरत रहतीं थीं।

13 मई 2016 को जब युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज नश्वर शरीर त्यागकर निरंकार में विलीन हुए, उस समय सम्पूर्ण निरंकारी जगत, जो भावनात्मक रूप से विचलित एवं अनिश्चय की स्थिति में था। सभी भक्तों को धीरज एवं मार्गदर्शन देने के लिए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

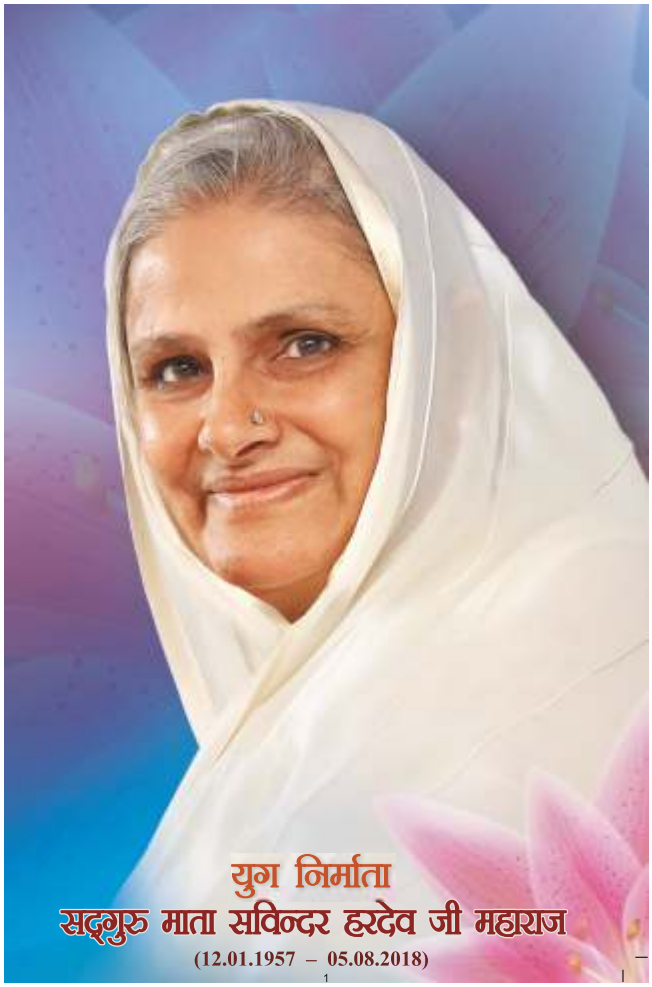

द्वारा जीवन काल में दिए गए पूर्व संकेतानुसार आपने 17 मई 2016 को सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर संभाली।

सद्गुरु रूप में अवतरित माता सविन्दर जी ने अपने पहले सम्बोधन में कहा 'बाबा जी प्रेम के साक्षात् रूप थे। वो सब की गलतियाँ भी प्यार से माफ करके टाल देते थे। कुछ भी हो, सिर्फ प्यार ही प्यार देते थे। बाबा जी यह भी चाहते थे कि हमारा आपसी प्यार बहुत ज्यादा हो। आज हम सब मिल कर यह कसम खायें कि जैसे बाबा जी चाहते थे हम मिल–जुलकर सबके साथ प्यार से आगे बढ़ें और इस मिशन को आगे से आगे पहुंचाएं।'

सद्गुरु रूप में अक्टूबर 2016 में अपनी पहली कल्याण यात्रा के दौरान आपने केन्द्र शासित क्षेत्र चण्डीगढ़ तथा करनाल (हरियाणा) के श्रद्धालुओं को दर्शन दिए।

17 मई 2016 से 16 जुलाई 2018 के दरम्यान सद्गुरु रूप में आपने जहाँ भारत के विभिन्न राज्यों–महाराष्ट्र, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, सिक्किम आदि राज्यों की कल्याण यात्रा की, वहीं दूर–देशों की कल्याण यात्रा के अन्तर्गत नेपाल, अमेरिका, कनाडा, यू.के. तथा खाड़ी देशों में बसे भक्तजनों को भी अपने दिव्य–दर्शनों से कृतार्थ किया।

सद्गुरु माता जी ने 69वें और 70वें वार्षिक निरंकारी सन्त समागमों की दिव्य रहनुमाई की तथा विश्व भर से आये श्रद्धालु–भक्तों को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान किया। सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा रचित 'सम्पूर्ण हरदेव बाणी' का लाभ मानव–मात्र को उपलब्ध कराने के लिए, आपने उसे प्रकाशित करवाकर 70वें वार्षिक सन्त–समागम के अवसर पर मानव समाज को अर्पित किया।

14 जनवरी 2018 को हरियाणा में जी.टी. करनाल रोड स्थित सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा में आयोजित भक्ति पर्व समागम के अवसर पर इस स्थान को समागम स्थल के रूप में विकसित करने के लिए एवं सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा बनाये गए प्रारूप को मूर्त रूप देने के लिए, आपने इस स्थल पर विधिवत निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया।

मानव समाज सेवार्थ आप द्वारा किए जा रहे कार्यों को मान्यता प्रदान करते हुए लाईफ काइरोप्रेक्टिक कॉलेज वेस्ट संस्था (अमेरिका) द्वारा सद्गुरु माता जी को 'सर्विस टू ह्यूमेनिटी अवार्ड 2017' द्वारा सम्मानित किया गया। अमेरिका स्थित संस्था वी केयर फॉर ह्यूमेनिटी द्वारा भी इस वर्ष 2018 का 'सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक विभूति अवार्ड' आपको प्रदान किया गया।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने मानव–मात्र को सदैव समर्पित भाव से जीवन जीने की शिक्षा दी और अपने कर्म द्वारा भी समर्पण की इस भावना को साकार स्वरूप प्रदान किया।

शहंशाह बाबा अवतार सिंह जी महाराज द्वारा अपने जीवन काल में ही बाबा गुरबचन सिंह जी को गुरुगद्दी सौंपने की परम्परा को ही आगे बढ़ाते हुए, सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने परम–पूज्य सुदीक्षा जी को 16 जुलाई, 2018 को सद्गुरु की जिम्मेदारी सौंप दी। 17 जुलाई, 2018 को एक विशाल सत्संग समारोह में सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने पूज्य सुदीक्षा जी के मस्तक पर तिलक लगाकर सद्गुरु के पवित्र आसन पर विराजमान किया।

पूज्य माता सविन्दर जी का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक नहीं चल रहा था। 5 अगस्त, 2018 को आप नश्वर शरीर त्याग कर निरंकार में लीन हो गए। आपका पार्थिव शरीर निरंकारी चौक के समीप ग्राउण्ड नं. 8 में अन्तिम दर्शनार्थ रखा गया, जहाँ देश–दूर देश से आए लाखों श्रद्धालु–भक्तों ने आपको नम आँखों से भावपूर्ण श्रद्धाँजलि अर्पित कर अन्तिम विदाई दी।

हालांकि माता सविन्दर जी को निरंकारी सद्गुरु के रूप में लगभग 2 वर्ष से कुछ अधिक समय तक ही विश्व का मार्गदर्शन करने का अवसर मिला लेकिन वास्तविक रूप में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के 36 वर्ष के कार्यकाल में भी आप पूर्णतः उनके साथ मिशन और मानवता का मार्गदर्शन करती रहीं। आपकी सेवा, भक्ति, समर्पण एवं मार्गदर्शन सदैव–सदैव जहाँ मानव मनों में बसा रहेगा, वहीं आध्यात्मिक मार्ग के राहियों को मंजिल तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा।

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

पढ़कर मौज मनाते

तुम खेलकूद में मस्त रहो,
हम पढ़कर मौज मनाते हैं।
पढ़ते-लिखते गुनते हैं जो,
बस नई दिशा वो पाते हैं।।

महापुरुषों की प्रेरक गाथाएं,
विज्ञान के नये-नये चमत्कार।
विश्व-चक्र का ज्ञान कराते,
पुस्तकें और अखबार।।

नई-नई बातों से भैया,
सदा परिचय होता है।
जो इधर-उधर में मस्त रहा,
जीवन व्यर्थ ही खोता है।।

पढ़ने-लिखने वाला बालक,
विनयशील विवेकी होता है।
परहित जीवन अर्पित करता,
सदा चैन से सोता है।।

गागर में जो सागर भरते,
स्नेह-सम्मान सदा वो पाते हैं।
तुम खेल-कूद में मस्त रहो,
हम पढ़कर मौज मनाते हैं।।

-सी. एल. गुलाटी, सचिव सं.शि.मं. (दिल्ली)

विश्व समाज में बच्चों का स्थान

संयुक्त राष्ट्र चिल्ड्रन्स फंड के कार्यालय निदेशक श्री जेम्स पी. ग्रांट ने विश्वभर के बच्चों के प्रति अपनी रिपोर्ट-1995 में चेतावनी भरा संदेश देते हुए कहा था– "जब तक बच्चों के विकास में हम विशेष रुचि नहीं लेते तब तक लम्बे समय से बनी हुई बहुत सी बुनियादी समस्याएं लम्बे समय तक बनीं रहेंगी।" आपने याद दिलाया कि सन् 1990 में 159 देशों ने अपने एक विशेष अधिवेशन में बच्चों की आवश्यकताओं और समस्याओं पर उच्च स्तर पर विचार-विमर्श कर एक अच्छा वायदा किया था जिसमें विश्व के सभी नेताओं ने बच्चों के लिए न केवल ऊँचे उसूलों की ही चर्चा की थी बल्कि एक कार्य-योजना को भी लिखित रूप में प्रस्तुत किया था। इस कार्य-योजना के अधीन विश्व के सभी देशों के नागरिकों को जिम्मेदारी दी गई कि वे अपने नेताओं और सरकारों को देखें कि वे बच्चों के हित के लिए क्या कर रहे हैं? और क्या नहीं कर रहे हैं?

आपने आग्रह किया कि हम सब राष्ट्रीय सरकारों, विधायिकाओं, सरकारी कर्मचारियों एवं सभी नागरिकों को किए गए वायदे को निभाने के लिए पूरा प्रयत्न करें। 'यूनिसेफ' का 1995 का यह संकल्प है कि अधिक से अधिक बच्चों के चेहरों पर खुशी की मुस्कान हो और इसमें प्रत्येक व्यक्ति का ऐसा योगदान मांगा गया है कि सभी मिलकर बच्चों को पूरे उत्साह के साथ आगे लाएं और समाज की शान बढ़ाएं।

बढ़ती हुई साम्प्रदायिक हिंसा को देखकर कई विश्वविद्यालयों के वाईस-चांसलर्स ने प्रसिद्ध समाचारपत्रों के प्रतिनिधियों से भेंटवार्ता में सन् 1985 में बताया था कि समाज को जोड़ने वाली ऐतिहासिक बातें एवं सभी धर्मों की बुनियादी एकता दर्शाने वाली निबंध पुस्तकें बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा का अंग होनी चाहिए। इस सुझाव को आदर्श बताते हुए किसी ने भी इसका पूर्ण रूप से अनुमोदन नहीं किया। रांची विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने बताया कि देश-प्रेम की भावना अथवा धर्मनिरपेक्षता बच्चों को प्रारंभिक जीवन में ही सिखाई जा सकती है क्योंकि धार्मिक मतभेद भारतीय बच्चों में पांच से दस वर्ष तक प्रवेश कर जाता है जो अन्ततः विनाशकारी सिद्ध होता है। उस्मानिया विश्वविद्यालय की रिपोर्ट के मुताबिक अगर जल्दी ही ठोस कदम नहीं उठाए गए तो हमारे बच्चे ईर्ष्या एवं शक की माहौल में पलेंगे और आंतरिक भिन्नता अथवा मानसिक बे-आरामी देश को तबाह कर देगी। यह सब कुछ कहने में ठीक तो लगता है परन्तु इस दर्दनाक माहौल से निकालने का क्रियात्मक ठोस सुझाव कोई न दे सका।

यह इस बात का प्रतीक है कि आज संसारभर की आंखें बच्चों पर लगी हुई हैं। किसी ने बच्चों को विश्व समाज की संपत्ति कहा है तो कोई इनको विश्व का भविष्य कहते हैं। आज सभी इस बात पर सहमत हैं कि बच्चों की सुरक्षा और प्रसन्नता से ही विश्व और समाज का कल्याण और विकास संभव हो सकता है।

अब प्रश्न उठता है कि बच्चों का मार्गदर्शन कैसा हो, जिससे वे अच्छे नागरिक बनें और विश्व की शान बढ़ाएं। ऐतिहासिक अनुभव, असंतुलित और अव्यवस्थित वर्तमान सामाजिक व्यवस्था इस बात का साक्षी है कि बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ जब तक उनके ख्यालात (विचारधारा) में शुद्धता नहीं आती तो समाज के हालात में भी सुधार

सम्भव नहीं होता बल्कि अच्छे हालात भी बिगड़ जाते हैं। अगर विचारधारा ठीक है तो हालात अपने आप ही ठीक होने लगते हैं। अधिक ध्यान बच्चों के चरित्र-निर्माण पर देना है। बाकी किसी भी चीज की कमी आने पर इंसान संभल सकता है परन्तु चरित्र गया तो समझो सब कुछ गया। शायद इसीलिए ही पुरातन समय में लोग बच्चों को गुरु के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा करते थे ताकि बच्चा विद्वान और गुणवान इंसान बने और अपने जीवन का सदुपयोग करते हुए समाज का कल्याण करे।

एक बार कुछ चंचल स्वभाव के बच्चे एक महात्मा के पास गए जिसकी प्रत्येक बात सच्ची होती थी। बच्चों ने एक पक्षी लेकर शाल के नीचे छिपा लिया और पूछना चाहा कि पक्षी जिंदा है या मरा हुआ। उनकी योजना थी कि अगर महात्मा पक्षी 'जिंदा' कहेगा तो शाल के अन्दर ही पक्षी की गर्दन दबाकर मरा हुआ दिखाया जाएगा। अगर वह पक्षी 'मरा हुआ' कहेगा तो उसे जिंदा दिखाया जाएगा। वास्तव में वे महात्मा को झूठा सिद्ध करना चाहते थे। जब बच्चों ने महात्मा से अपना प्रश्न पूछा कि पक्षी मरा हुआ है या जिंदा तो आगे से उत्तर मिला, "पक्षी का मरना व जीना तो अब आपके हाथ में है।" यह उत्तर सुनकर बच्चे बहुत ही प्रभावित हुए। ठीक इसी प्रकार आने वाला समय उस पक्षी की तरह बच्चों के हाथ में है और बच्चों की विचारधारा को सही मोड़ देना महात्मा के वचन की तरह आज समाज के हाथ में है।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

राम और श्याम बड़ी ही मस्ती में फुटबाल खेल रहे थे। खेलते-खेलते राम ने फुटबाल को बहुत ऊँचा उछाल दिया।
उसके बाद उनकी फुटबाल ना जाने कहाँ गुम हो गई, वे उसे ढूंढने मे लग गए।
फुटबाल को ढूंढते-ढूंढते राम ने जमीन पर बिछी हुई तरबूज की बेल और एक जामून के पेड़ को देखा।

जामून के पेड़ पर खूब सारे काले-काले जामून लगे हुए थे। राम ने श्याम को आवाज लगाई और जामून के गुच्छे दिखाने लगा।
राम ने श्याम से कहा– देखो श्याम कितने काले और मीठे जामून लगे हैं, पर हम तोड़ भी नहीं सकते। कितना ऊँचा पेड़ है!
प्रकृति की भी खूब रचना है, छोटे से जामून को तो इतने ऊँचे पेड़ पर लगा दिया, और बड़े से तरबूज को नीचे जमीन पर!

कितना अच्छा होता अगर जामून जमीन पर लगे होते? श्याम चुपचाप खड़ा राम की बात सुनता रहा।
अचानक जामून के पेड़ से एक जामून टूटकर राम के सिर पर गिर गया। राम छटाक से उछल पड़ा।
यह देखकर श्याम बोला- राम तुम एक छोटे से जामून के सिर पर गिरने से उछल पड़े, अगर यही तरबूज होता तो क्या होता?
राम झट से बोला- फिर तो मेरा सिर ही फूट गया होता।
श्याम ने कहा-प्रकृति ने जो भी जैसा बनाया है वह अच्छा है, उसमें किसी प्रकार का दोष निकालना ठीक नहीं है।
बच्चों! इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रकृति की किसी भी रचना की निंदा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह तो प्रकृति भगवान की रचना है और भगवान ने जैसा बनाया वह ठीक है।

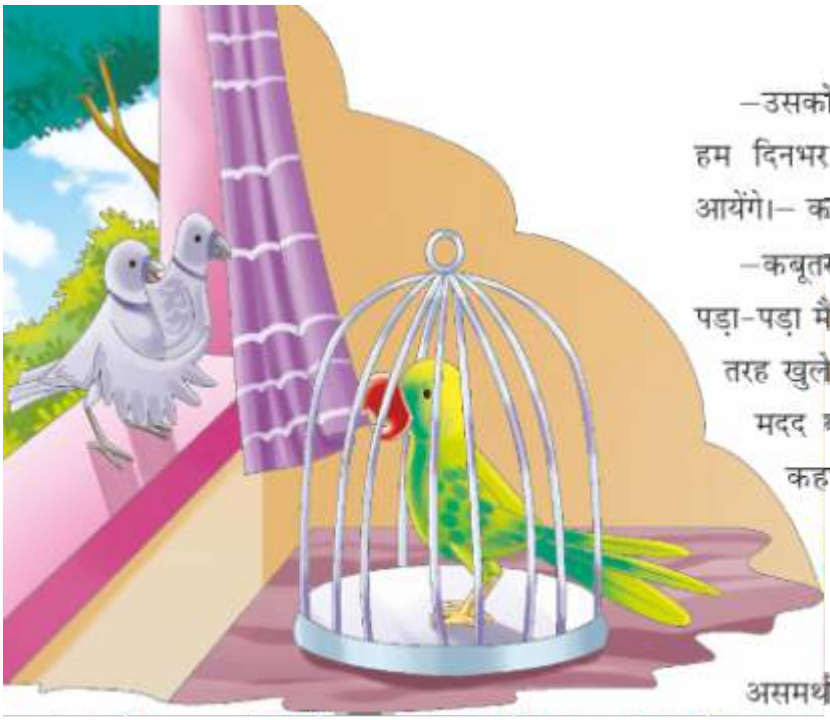

बाल कहानी : अमर सिंह शौल

कैद से छुटकारा

हवेली के जिस कमरे में मिट्ठू तोता पिंजरे में बन्द था। उसी कमरे में एक कबूतरों का जोड़ा भी था। कबूतरों का जब दिल करता तब वे बाहर घूमने चले जाते। जब दिल करता तब वापस अपने स्थान पर आ जाते। कबूतरों को ऐसा करते देख मिट्ठू तोते का मन भी बाहर खुले आकाश में उड़ने को करता। पर वह क्या करे? पिंजरे की सलाखों के पीछे बन्द पड़ा है। वह उन्हें तोड़ भी नहीं सकता था। मन मारकर चुपचाप बैठ जाता।

एक दिन उसने कबूतरों के जोड़े को अपने पास बुलाया। हवेली का मालिक तुमको बाहर कैसे जाने देता है? मुझे इस पिंजरे में बन्द हुए बहुत दिन हो गये उसने मुझे आज तक एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा। इसके पीछे क्या राज है? ये बात मेरी समझ में नहीं आई।– तोते ने प्रश्न किया।

–उसको हमारे ऊपर विश्वास हो चुका है कि हम दिनभर घूम-फिर कर शाम को यहीं लौट आयेंगे।– कबूतर ने उसके प्रश्न का जवाब दिया।

–कबूतर भाई बहुत दिनों से इस पिंजरे में बन्द पड़ा-पड़ा मैं बहुत परेशान हो गया हूँ। मैं भी तुम्हारी तरह खुले आकाश में उड़ना चाहता हूँ। मेरी कुछ मदद करो।– तोते ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

–मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? मैं भी तो तुम्हारी तरह एक छोटा-सा पक्षी ठहरा– कबूतर ने अपनी असमर्थता जताई।

–ऐसा न कहो कबूतर भाई, मैं तुमसे बहुत उम्मीद लगाये बैठा हूँ। जिस दिन से तुम इस हवेली में आये हो।

–मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता तोते भाई।

–तुम ही इन्हें समझाओ बहन।– तोते की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। आँसुओं को देख कबूतरी का मन पिघल गया।

–ठीक है तोते भाई, हम तुम्हारी मदद जरूर करेंगे। हमें सोचने का थोड़ा समय दो।– कबूतरी का

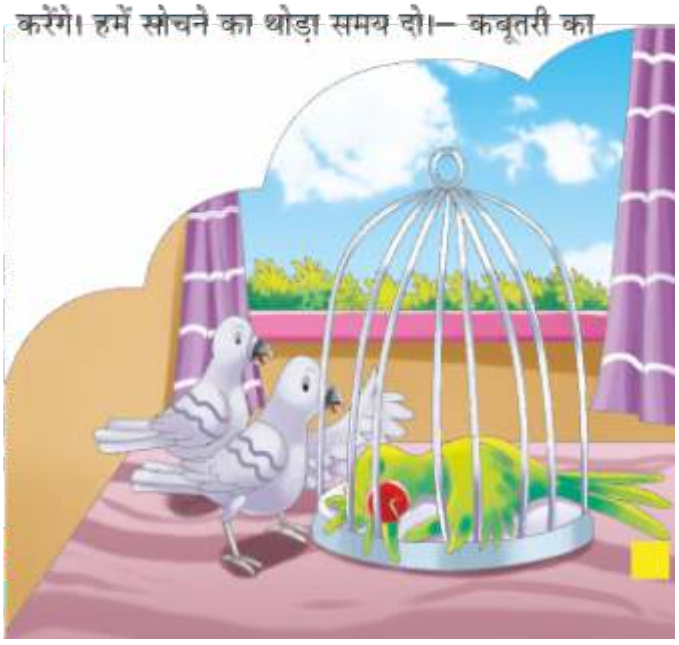

आश्वासन पाकर तोते की जान में जान आई।

दूसरे दिन कबूतरी तोते के पिंजरे के पास गई और कहने लगी– तोते भाई मैंने तुम्हारे छूटने की तरकीब ढूंढ़ ली है।

–मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास था। बहन कि तुम जरूर मेरी समस्या का समाधान ढूंढ़ लोगी।– तोते ने प्रसन्नता से उसकी ओर देखते हुए कहा।

कबूतरी ने तोते को एक तरकीब बताई।

एक-दो दिन तुम अन्न-जल बिल्कुल ग्रहण न करना, एकदम बेजान से पड़े रहना। हवेली का मालिक समझेगा कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, दो दिन के बाद तुम बिल्कुल बेजान मुर्दे की तरह आँखें बन्द करके पड़ जाना। वह तुम्हें कितना ही हिलाये डुलाये तुम बिल्कुल मत हिलना। वह तुम्हें मरा समझ के पिंजरे से बाहर निकालेगा। उस समय तुम मौका पाकर उड़ जाना।

–शुक्रिया बहन, मैं ऐसा ही करूंगा।– तोते ने कहा।

तोते ने वैसा ही किया जैसा कबूतरी ने उसे समझाया था। मन ही मन वह कबूतरी का धन्यवाद कर रहा था। उसकी बताई तरकीब के द्वारा ही वह आज उस पिंजरे की कैद से छुटकारा पा सका था। अब वह स्वतंत्र होकर खुले आकाश में उड़ रहा था। ■

हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा होगा कैसे?

★ पैंसिल को अगर रात भर के लिए फ्रिज के अन्दर रख देंगे तो यह आसानी से छिलेगी।

★ अगर तुम्हारे जूते–चप्पलों की चमक गायब हो गई है तो केले को खाने के बाद उसके छिलकों को फेंकों नहीं वरन् उसी छिलकों से अपने जूते–चप्पलों को रगड़ दो। फिर देखो उनकी चमक।

★ दीवार पर कोई कॉर्ड, पोस्टर या ड्राईंग चिपकानी है और गोंद गायब हैं ऐसे में टूथ–पेस्ट का इस्तेमाल कर सकते हैं। यही नहीं जब बाद में पोस्टर उतारेंगे भी तो दीवार पर धब्बे भी नहीं पड़ेंगे।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

हिमाचल प्रदेश का राज्य पशु

हिम तेंदुआ

हिम तेंदुआ मध्य एशिया के पर्वतीय भागों का शानदार वन्यजीव है। इसका वैज्ञानिक नाम 'पैन्थरा अंसिया' है। अंग्रेजी में इसे 'स्नो लेपर्ड' और 'आउन्स' कहते हैं। इसके कुछ स्थानीय नाम भी विकसित हो गये हैं, जहाँ इसे इन्हीं नामों से जाना जाता है। यह हिमालय पर्वत के बर्फीले भागों और टोडोडेनड्रोन के वनों में 3660 मीटर से लेकर चार हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले बर्फ से ढँके भागों में पाया जाता है। गर्मियों में यह 5000 मीटर तक की ऊँचाई तक पहुँच जाता है। कभी-कभी इसे 6000 मीटर तक ऊँचे स्थानों पर भी देखा गया है। इतनी ऊँचाई वाले भागों तक मानव सरलता से नहीं पहुँच पाता है। हिम तेंदुआ में सर्दी सहन करने की बहुत अधिक क्षमता होती है। यह शून्य से चालीस डिग्री सेल्सियस तक नीचे के तापमान वाले भागों में भी सरलता से रह सकता है।

हिम तेंदुआ निर्जन बर्फीले प्रदेशों का वन्यजीव है। इसे सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में देखा जा सकता है। यह कश्मीर और भूटान से लेकर तिब्बत तक तथा एटलस की पर्वत श्रृंखलाओं में पाया जाता है। भारत में यह हिमालय पर्वत के अधिकांश क्षेत्रों कश्मीर, लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश के उत्तरी भागों में, उत्तरांचल के कुमायूं, टिहरी और गढ़वाल के ऊँचाई वाले भागों में मिलता है। इसे हिमालय से लगे क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है।

हिम तेंदुआ एल्पाइन के जंगलों में, छोटी-छोटी झाड़ियों वाले भागों, पथरीले और चट्टानी क्षेत्रों में ऐसे स्थानों पर रहता है, जहाँ प्राय: वृक्ष नहीं पाये जाते। यही कारण है कि इसे वृक्षों पर चढ़ने का अभ्यास नहीं होता और यह अपना सम्पूर्ण जीवन जमीन पर व्यतीत करता है।

हिम तेंदुआ एकान्त में विचरण करने वाला वन्य जीव है। यह रात्रिचर है। अर्थात् दिन के समय यह मांदों, पत्थरों के नीचे, चट्टानों की दरारों में अथवा ऐसे ही किसी स्थान पर आराम करता है और रात में सक्रिय होता है। किन्तु कभी-कभी इसे दिन के समय भी घूमते हुए देखा गया है। हिम तेंदुआ बाघ और सामान्य तेंदुए के समान अपना सीमा क्षेत्र बनाता है। यह अपने क्षेत्र की सीमा के पत्थरों, चट्टानों, बर्फीले शिलाखंडों आदि को अपने नाखूनों से खरोंच कर निशान बनाता है एवं इन्हीं स्थानों पर मल-मूत्र विसर्जित करता है। हिम तेंदुआ ऐसे स्थानों पर रहता है जहाँ भोजन बहुत कम उपलब्ध होता है। अत: इसके सीमा क्षेत्र बहुत बड़े होते हैं। इसके सीमा क्षेत्र इतने बड़े होते हैं कि सीमा क्षेत्र वाले दो नर हिम तेंदुए प्राय: एक-दूसरे से जीवन भर नहीं मिल पाते। हिम तेंदुआ अपने सीमा क्षेत्र के प्रति अधिक संवेदनशील नहीं होता। इसके सीमा क्षेत्र में कोई भी बाहरी हिम तेंदुआ आ सकता है। यह उसे कोई हानि पहुँचाये बिना अपने क्षेत्र से गुजर जाने देता है। किन्तु किसी भी हालत में दूसरे हिम तेंदुए को यह अपना शिकार नहीं देता।

हिम तेंदुआ प्रवासी वन्यजीव है। यह शिकार के कारण प्रतिवर्ष प्रवास करता है। सर्दियों के मौसम में शिकार के अधिकांश जीव नीचे घाटी में आ जाते हैं। इनके साथ यह भी नीचे घाटी में आ जाता है। सर्दियों के मौसम में यह कभी-कभी 1830 मीटर तक की ऊँचाई पर आ जाता है। इसकी प्रवासी गतिविधियां, उन जीवों के अनुसार होती हैं, जिनका यह शिकार करता है।

हिम तेंदुए की शारीरिक संरचना सामान्य तेंदुए से कुछ भिन्न होती है। यह सामान्य तेंदुए से कुछ छोटा होता है। इसके शरीर की लम्बाई 190 सेंटीमीटर से लेकर 220 सेंटीमीटर तक होती है। इसमें इसकी लगभग 90 सेंटीमीटर लम्बी पूंछ भी सम्मिलित है। इसकी ऊँचाई सामान्य तेंदुए से कुछ कम होती है तथा वजन 35 किलोग्राम से लेकर 55 किलोग्राम तक होता है। इसके शरीर का रंग सफेदी लिये हुए मटमैला धूसर से लेकर धुआं जैसा धूसर होता है तथा नीचे का भाग अर्थात पेट

और चारों पैरों का भीतरी भाग सफेद होता है एवं इस पर गुलाब की पंखुड़ियों के समान काले रंग के धब्बे होते हैं। इसके चेहरे और पीछे के पैरों पर भी इसी प्रकार के निशान होते हैं। इसके शरीर की चित्तियां सामान्य तेंदुए की चित्तियों से कुछ अधिक लम्बी होती हैं एवं इनके मध्य का भाग सफेद होता है। हिम तेंदुए के शरीर की चित्तियां गर्मियों में अधिक स्पष्ट दिखाई देती हैं किन्तु सर्दियों में इनका रंग फीका पड़ जाता है। इसकी पूंछ सामान्य तेंदुए से कुछ बड़ी, मोटी और घने बालों वाली होती है।

हिम तेंदुए का समूर बड़ा शानदार होता है। इसका समूर मार्जार परिवार के सभी जीवों में सर्वाधिक कोमल, घना एवं सुन्दर माना जाता है। यह सामान्य तेंदुए से छोटा होता है किन्तु लम्बे और घने बालों वाले समूर के कारण अपने आकार से काफी बड़ा और भारी दिखाई देता है। हिम तेंदुए का चेहरा मार्जार परिवार के अन्य जीवों से अलग होता है। इसका चेहरा गोल, मस्तक ऊँचा और थूथुन छोटा होता है। इसके नाक के नथुने बड़े होते हैं। इससे इसे सांस लेकर अपने शरीर को गर्म रखने में सहायता मिलती है। इसके चारों पैर शरीर की तुलना में अधिक शक्तिशाली होते हैं एवं पंजे अधिक चौड़े होते हैं जिनसे इसे बर्फ पर चलने में सुविधा रहती है। इसकी विशिष्ट शारीरिक संरचना ने इसे बर्फीले क्षेत्रों का शानदार जीव बना दिया है।

हिम तेंदुआ सामान्य तेंदुए की तरह हिंसक और खूंखार वन्यजीव है। यह निशाचर है। अर्थात् दिन में आराम करता है और सोता है तथा रात में शिकार की खोज में निकलता है। यह प्रात:काल सूर्य निकलने के समय और शाम को सूर्य अस्त होने के बाद अधिक सक्रिय होता है। हिम तेंदुए की विशिष्ट शारीरिक संरचना और शक्तिशाली पंजों ने इसे बड़ा हिंसक शिकारी जीव बना दिया है। यह बड़े-बड़े जीवों को सरलता से मार सकता है। इसमें इतनी शक्ति होती है कि यह अपने शरीर से आठ गुना भारी लगभग 300 किलोग्राम वजन वाली चंवरी गाय का सरलता से शिकार कर लेता है किन्तु यह ऐसे स्थानों और परिस्थितियों में रहता है जहाँ इतने बड़े जीव बहुत कम मिलते हैं।

हिम तेंदुए का शिकार विविधतापूर्ण होता है। यह चूहे जैसे छोटे जीवों से लेकर जंगली बकरियों और भेड़ों तक का शिकार करता है। सामान्यतया यह कस्तूरी मृग, साकिन (आइबेक्स), हिमालयी ताहर, मारखोर, हिम मूस (मार्मोट), पहाड़ी खरगोश आदि का शिकार करता है। इनके साथ ही यह पक्षियों को भी अपना निशाना बनाता है। भोजन की कमी होने पर यह चूहे, मूस, छिपकली तथा इसी तरह के छोटे जीवों को खाकर अपना काम चलाता है।

लघु प्रेरक-प्रसंग : रूपनारायण काबरा

देशभक्ति

महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के काटलुक गाँव में एक प्राइमरी स्कूल था। कक्षा चल रही थी। अध्यापक ने बच्चों से एक प्रश्न किया– यदि तुम्हें रास्ते में एक हीरा मिल जाए तो तुम उसका क्या करोगे?

–मैं उसे बेचकर कार खरीदूंगा।– एक बालक ने कहा।

दूसरे ने कहा– मैं उसे बेचकर धनवान बन जाऊँगा।

तीसरे ने कहा कि वह उसे बेचकर विदेश यात्रा करेगा।

चौथे बालक का उत्तर था– मैं उस हीरे के मालिक का पता लगाकर उसे लौटा दूंगा।

अध्यापक चकित थे। फिर उन्होंने कहा कि मानो खूब पता लगाने पर भी उसका मालिक न मिला तो?

बालक बोला– तब मैं हीरे को बेचूंगा और उससे मिले पैसे को देश की सेवा में लगा दूंगा। शिक्षक बालक का उत्तर सुनकर खुश हुए और बोले– शाबाश! तुम बड़े होकर सचमुच देशभक्त बनोगे। शिक्षक का कहा सत्य हुआ और वह बालक बड़ा होकर सचमुच देशभक्त बना, उसका नाम था– गोपालकृष्ण गोखले।

बोधकथा : रूपनारायण काबरा

खुशहाली का सच्चा रास्ता

हकीम लुकमान से एक दिन उसके बेटे ने पूछा– अगर प्रभु संतुष्ट होकर कुछ मांगने के लिये कहें तो मैं क्या मांगू?

पिता ने कहा– परमार्थ का धन।

बेटे ने फिर पूछा– और कुछ मांगने को कहें तो?

लुकमान ने कहा कि 'पसीने की कमाई।'

बेटे ने फिर पूछा और...?

जवाब मिला– उदारता।

अगर और भी देना चाहें तो? बेटे ने फिर पूछा।

लुकमान बोले– शर्म।

बेटा बोला– यदि वे और भी आग्रह करें तो?

–अच्छा स्वभाव मांग लेना।– लुकमान का जवाब था।

इनके अलावा भी कुछ और मांगने को कहें तो?

लुकमान ने कहा– बेटा, जिसको ये पांचों अमूल्य वस्तुएं मिल जायें तो और कुछ मांगने के लिये बचता भी नहीं। पुत्र, जीवन में खुशहाली का यही एक रास्ता है, जो भी इन्सान इन पांचों को आत्मसात् कर लेता है, उसको संसार में भटकने की आवश्यकता नहीं। अस्तु, तुझे भी इसी मार्ग पर चलना चाहिये और ऐसा करने से ही जीवन 'सत्यम शिवम सुन्दरम' बन सकता है।

कविता : हरजीत निषाद

उतने गहरे हैं सागर

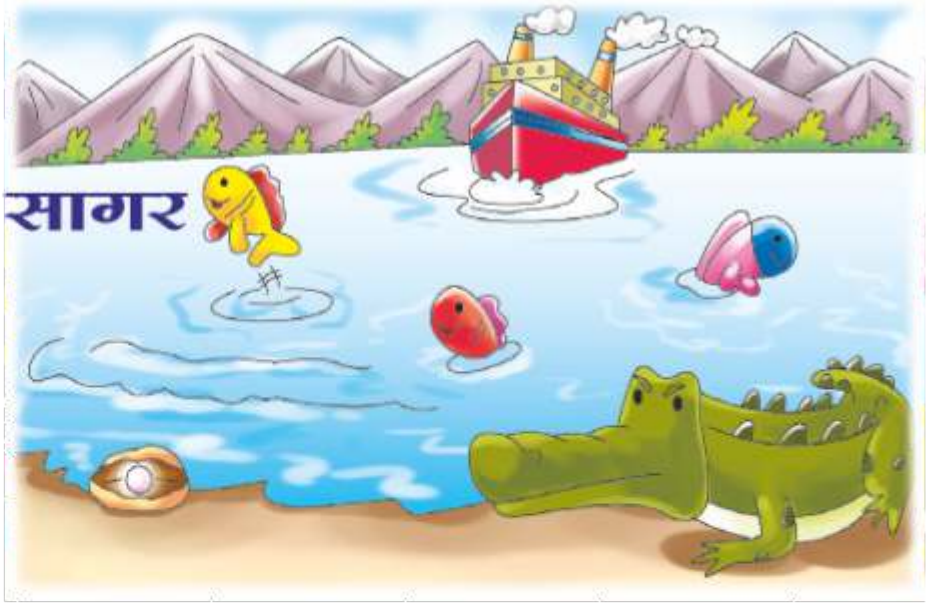

सागर जल जीवों का घर।
रहते मछली और मगर।
जितने ऊँचे हैं पर्वत,
उतने गहरे हैं सागर।

मूल्यवान मोती पत्थर।
लातीं लहरें धरती पर।
लहरों पर सवार होकर,
बढ़ता है जलयान निडर।

पूनम की चाँदनी आती।
लहरों पर तब मस्ती छाती।
याद आई जब मर्यादा,
लहरें फिर घटती जाती।

शोर मचाती हैं लहरें।
संगीत सुनाती हैं लहरें।
चलते रहना जीवन है,
हमको सिखलाती हैं लहरें।

कविता : कमलसिंह चौहान

चींटी का व्यवहार

काली लाल भूरी चींटी,
एक कतार में चलती चींटी।
आपस में ना टकराती हैं,
अनुशासन में रहती हैं चींटी।।

सबसे प्यार जताती चींटी,
संतुलन खुद बनाती चींटी।
सामने आती जब बाधाएं,
विनम्रता से राह बनाती चींटी।।

ट्रेफिक का निपटान हो कैसे,
एक दूजे को सिखाती चींटी।
नहीं किसी से झगड़ा करती,
एकता का पाठ पढ़ाती चींटी।।

समझ बूझ और है संतुलन,
इनमें होता भीड़ प्रबंधन।
साथियों का साथ निभाती,
सूझवान होती है चींटी।।

जानकारी : इंलू रानी

अनोखा ज्वालामुखी पर्वत

पृथ्वी जब अपना गुस्सा दिखाती है तो भूकम्प या ज्वालामुखी को जन्म देती है। पृथ्वी का गुस्सा मैक्सिको के एक गाँव में बड़ा दुखदायी साबित हुआ, जिस कारण पूरा गाँव ही राख के ढेर में बदल गया।

घटना आज से पांच दशक पूर्व की है। मैक्सिको के एक किसान के खेत में एक ज्वालामुखी ने जन्म लिया। जमीन के एक छेद से धुएं की एक बदली निकलती दिखाई दी। धीरे-धीरे यह बदली जमीन से ऊपर उठने लगी, साथ ही जमीन से जलता लावा भी निकलने लगा। धीरे-धीरे यह लावा बढ़ता चला गया। इस कारण पूरा गाँव गर्मी से कांप उठा। नदी व नाले सूख गये, खड़ी फसलें जलकर राख हो गईं। घास-फूंस की झोपड़ियां ज्वालामुखी की गर्मी से सुलगने लगीं। हजारों पशु-पक्षी व आदमी ज्वालामुखी से जहरीली गैस रिसने के कारण मौत के मुंह में समा गये।

जो लोग समझदार थे। वे गाँव छोड़कर दूर चले गये।

मात्र पांच महीने के सफर में यह ज्वालामुखी 1800 फुट ऊँचा हो गया।

जब कुछ वैज्ञानिकों ने आकर ज्वालामुखी पर्वत को छूने का प्रयास किया तो इस ज्वालामुखी ने अपना गुस्सा फिर दिखाया। अचानक पचासों विस्फोट हुए। पूरे वातावरण में एक बार फिर जहरीली गैस फैल गई। कई पशु-पक्षी व आदमी इसकी चपेट में आये।

यह ज्वालामुखी अपने सीने से आज भी धुआं उगल रहा है। वैज्ञानिकों के लिए यह एक रहस्य का विषय बना हुआ है।

– संग्रहकर्ता : भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

क्या आप जानते हैं?

★ भारत का प्रथम मुख्य सेनापति जनरल के. एम. करिअप्पा थे।
★ रिक्शा सबसे पहले 1869 में जापान में प्रयोग किया गया था।
★ चार दिन का सप्ताह तिब्बत में मनाया जाता है।
★ सबसे पहले पोस्ट कार्ड हंगरी में चलाया गया था।
★ यजुर्वेद की रचना गद्य और पद्य दोनों में की गई है।
★ शुक्र ग्रह को भोर का तारा कहा जाता है।
★ भारत की पहली बोलती फिल्म आलमआरा थी।
★ मंगल ग्रह को लाल ग्रह भी कहा जाता है।
★ शुक्र ग्रह को पृथ्वी की जुड़वा बहन कहा जाता है।
★ 'गुगली' शब्द क्रिकेट खेल से सम्बन्धित है।
★ भरतनाट्यम का आरम्भ तमिलनाडु में हुआ था।
★ उड़ने वाले सांप मलेशिया में पाये जाते हैं।
★ बेल्जियम एक ऐसा देश है जहाँ नंगे पांव चलने वालों को दण्ड दिया जाता है।
★ अफ्रीका के शहर टीमजा में सारे मकान नमक से बने होते हैं।

बाल कहानी : श्यामसुन्दर गर्ग

संगत का असर

एक कौए और हंस में दोस्ती थी। एक दिन हंस ने कौए से कहा– भाई कौए, मैं तुम्हारा घोंसला देखना चाहता हूँ।

'क्यों नहीं, नेकी और पूछ-पूछ।' कौए ने कहा। कौआ आगे-आगे और हंस पीछे-पीछे उड़ा। ज्योंही कौए ने हंस को अपना घोंसला दिखाया, हंस को गन्दगी देखकर उबकाई आने लगी।

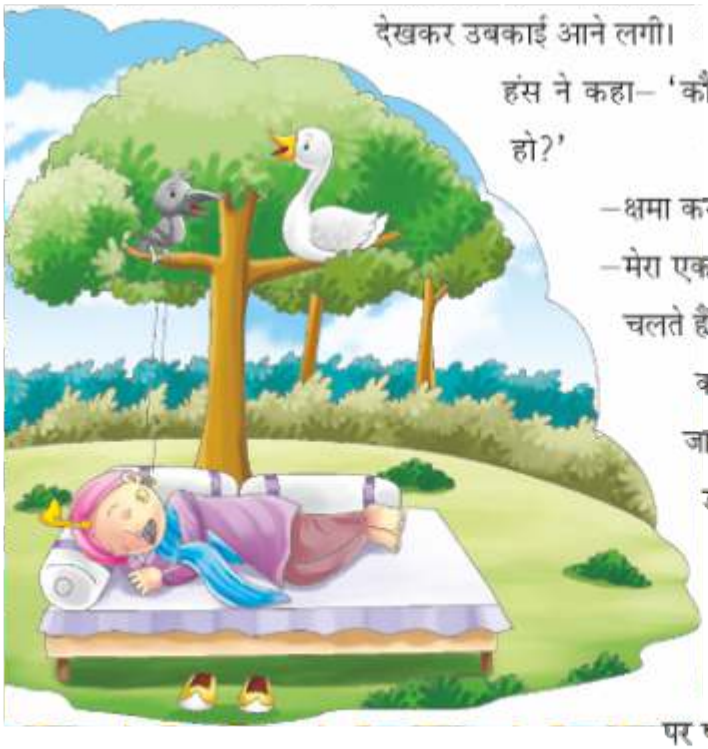

हंस ने कहा– 'कौए भाई, तुम कैसी गन्दगी वाली जगह में रहते हो?'

–क्षमा करना भाई।– कौए ने जवाब दिया।

–मेरा एक और घोंसला है। अब हम उस घोंसले की ओर चलते हैं।

कौआ हंस को साथ लेकर एक बगीचे की ओर जा उड़ा। बगीचे में पहुँचकर कौआ एक पेड़ की डाल पर जा बैठा। हंस भी वहीं पर अपने पंख फैलाकर सुस्ताने लगा। उसी पेड़ के नीचे उस राज्य के राजा सुस्ता रहे थे। कौए ने अपनी आदतवश बीट कर दी। बीट राजा की देह पर पड़ी। राजा ने बहेलिया की ओर इशारा किया। बहेलिया ने निशाना साधा। चालाक कौआ उड़ चुका था। हंस को तीर लगा और तड़प-तड़प कर नीचे आ गिरा।

'क्षमा करना राजन।' हंस ने कराहते हुए कहा, 'मैं स्वच्छ जल में रहने वाला हंस हूँ, कौआ नहीं। धूर्त कौए की संगत का असर है कि मैं निर्दोष होते हुए भी सजा भुगत रहा हूँ।'

देखते ही देखते हंस के प्राण पखेरू उड़ गए।

आलेख : पुष्पेश कुमार

बड़े-बड़े शिकारी जीव-जंतु भी डरते हैं छछूंदर से

यदि आपसे पूछा जाए कि संसार का सबसे भयंकर और खतरनाक जीव कौन-सा है, तो आपका जवाब होगा– कोबरा। लेकिन इसके विपरीत जीव वैज्ञानिकों का कहना है कि संसार का सबसे खतरनाक, घातक और भयंकर जीव है– छछूंदर। आपको यह जानकर काफी आश्चर्य हो रहा होगा कि इतना छोटा-सा जीव इतना खतरनाक, घातक और भयंकर हो सकता है; जिसका वजन मात्र कुछ औंस और लम्बाई छः इंच से अधिक नहीं। छछूंदर की आयु डेढ़ साल से अधिक नहीं होती। यह डेढ़ साल के भीतर अपनी सारी शक्ति खोकर प्रायः मर जाता है।

छछूंदर के खतरनाक होने का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह किसी जीव-जन्तु से नहीं डरता है। यह अपने से आकार में बड़े जीवों को मारकर खा जाता है। बड़े शिकारी कुत्ते या लोमड़ी के सामने भला छछूंदर की क्या बिसात! लेकिन बड़े शिकारी कुत्ते या लोमड़ी भी इससे भय खाते हैं। कुत्ते या लोमड़ी इसे अपने दांतों में दबोचते ही पलभर में दूर भाग खड़े होते हैं। एक उल्लू ही है जो इसे मारकर खा सकता है। लेकिन सभी उल्लू इसे खाकर पचा नहीं सकते। कुछ बिरले उल्लू ही इसे पचा सकते हैं। बाकी तो इसे खाकर बीमार पड़ जाते हैं। छछूंदर जितना छोटा जीव है, उतना ही पेटू है। जितना इसका वजन है उतना ही भोजन यह प्रतिदिन तीन घंटे में चट कर जाता है। इस भोजन से प्राप्त शक्ति को यह इतनी तेजी से खर्च कर देता है कि यदि कभी यह दिनभर भूखा रह जाये तो दिन डूबने के पूर्व ही इस संसार से विदा हो जायेगा।

छछूंदर वैसे तो वनवासी प्राणी है, किंतु गाँव-शहरों में भी निवास करता है। यह दिन-रात भोजन की खोज में भटकता रहता है। छछूंदर प्रायः

हरे-भरे मैदानों में अपने शिकार की खोज में इधर-उधर सूंघता हुआ घूमता रहता है और कभी-कभी उससे जा टकराता है क्योंकि इसकी आँख बहुत छोटी होती है और इनसे लगभग कुछ दिखायी नहीं पड़ता है। यह चीते की तरह अपने शिकार जैसे छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, तितली या झींगुर आदि पर सीधे वार करता है। छछूंदर सर्वभक्षी है। भोजन करते समय आनंदोल्लास की

उत्तेजना से इसका सारा शरीर कांपता रहता है। छछूंदर मनुष्य के लिए उपयोगी जीव है। कृषि और वन सम्पदा को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़ों को आसानी से सफाया कर देता है। यह चूहे तक को आसानी से मारकर, उसकी हड्डी ही नहीं बालदार खाल को भी आसानी से पचा लेता है।

जहरीले भुजंग भी इससे डरते हैं क्योंकि वे इसका प्रिय भोजन है। छछूंदर के थूक की गिल्टियों में काले नाग के जैसा भयंकर विष पाया जाता है। इसके दांत लगते ही शिकार को कुछ सूझ नहीं पड़ता। मस्तिष्क में धुंध छा जाती है। सांस लेने में कष्ट होता है और इसके बाद लकवा (फालिज) पड़ जाता है। जब कभी इसे किसी बड़े शत्रु से सामना हो जाता है और इसे दबोच लेता है, तो यह अपनी तंत्र शक्ति का प्रयोग करता है। इसके पेट में एक ऐसी गिल्टी होती है, जिसे यह जब चाहे अपनी इच्छानसुार उपयोग कर सकता है। इस गिल्टी से बहुत ही भयंकर गंध या गैस निकलती है, जो पलभर में इस पर आक्रमण करने वाले शिकारी जीव को पलायन करने को बाध्य कर देती है। उस गंध के कारण वह शिकारी जीव बीमार होकर या तो समर्पण कर देता है या पलायन कर जाता है। इसकी एक और विशेषता है कि यह किसी से डरता नहीं है। यह साहसी भी है और गुस्सैला भी। फुर्ती का क्या कहना। यदि इसे सांप के साथ छोड़ दिया जाए तो यह जल्दी से जल्दी सांप को मारकर खा जावेगा।

छछूंदर का जन्म और जीवन क्रम किसी खोखले पेड़ से शुरू होता है। यह किसी पेड़ के कोटर में अथवा किसी गड्ढे के सुरक्षित स्थान में जन्म लेते हैं, जो एक सप्ताह के भीतर घोंसले के आसपास रेंगने लगते हैं। जब ये बच्चे तीन-चार सप्ताह के हो जाते हैं तो इनकी माता इनका अन्न प्राशन संस्कार करती है और इन्हें छोटे-छोटे दीमकों का भोजन प्रदान करती है। कुछ समय के उपरांत इनकी माता इन्हें अपने निवास से बाहर खदेड़ देती है और उस दिन से ये अपने पैरों पर खड़े होकर भोजन की खोज में भटकने लगते हैं।

पितामह दिवस (12 सितम्बर पर विशेष)

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

दादा-दादी, मम्मी-पापा

दादा-दादी, मम्मी-पापा,
सारे जग से न्यारे।
सीधे सच्चे, सबसे अच्छे,
मुझको लगते प्यारे।।

रोज सवेरे बस्ता लेकर,
मैं भी पढ़ने जाता।
पापा आते आठ बजे तक,
मैं जल्दी आ जाता।।

दादा जी को मैं शाला के,
नियमित हाल सुनाता।
इसी समय खाना टेबल पर,
गरम-गरम आ जाता।।

दादा-दादी, मम्मी-पापा,
साथ हमारे खाते।
और बीच में खाने के वे,
बातें खूब बनाते।।

बच्चों सी वे बातें करते,
अपने बचपन वाली।
शाला की, घर की, शादी की,
बातें सभी निराली।।

अपने मन में सोच रहा यह,
खूब बड़ा हो जाऊँ।
सेवा करके मैं इन सबकी
जीवन सफल बनाऊँ।।

कहानी : डॉ. विकास मानव

निडर बालक मल्हारी

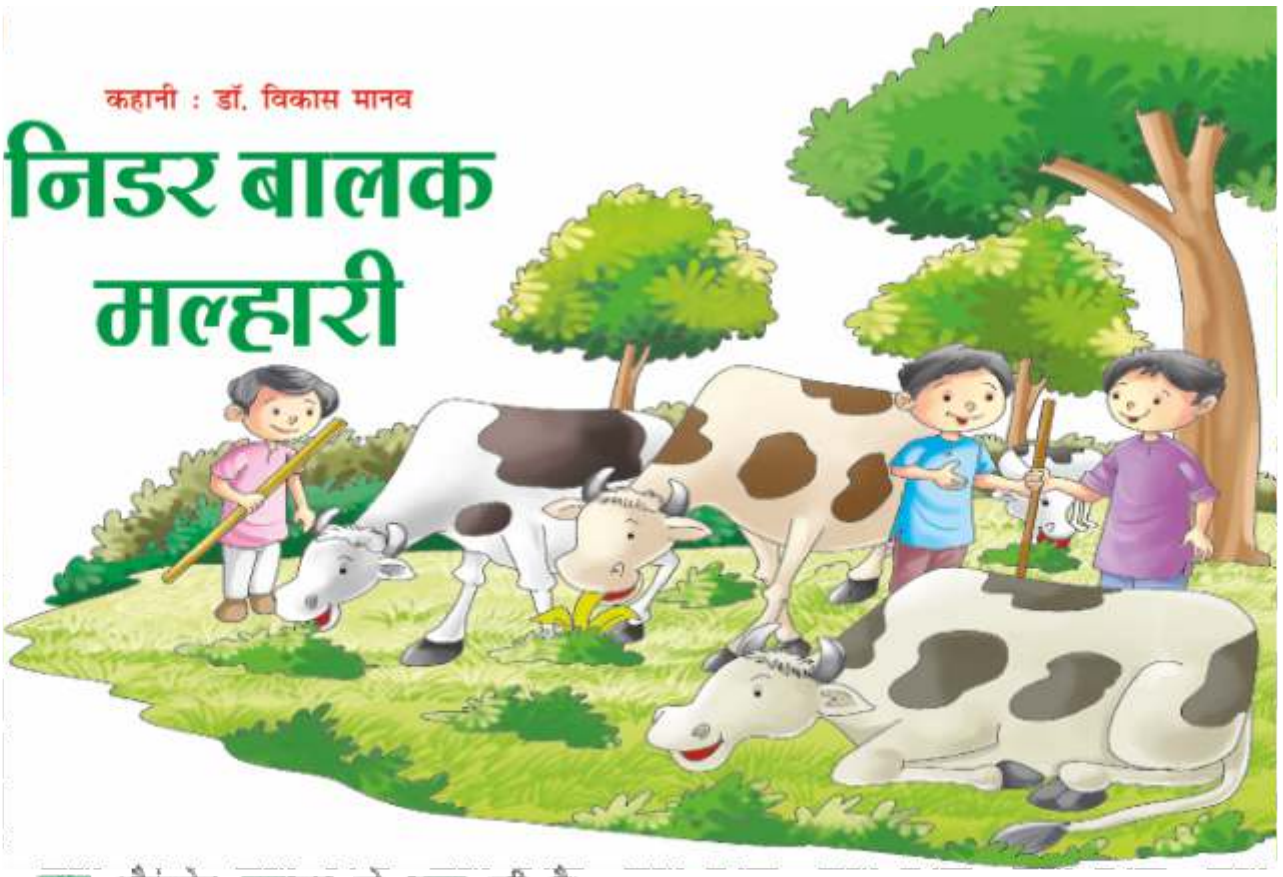

बात औरंगजेब बादशाह के समय की है। बादशाह अगर किसी की धाक मानता था तो केवल मराठों की। दिल्ली का यह शहंशाह बाजीराव के पराक्रम उनकी चतुरता वीरता व दूरदर्शिता से प्रभावित था। उनके अलावा किसी को कुछ नहीं समझता था। मुगल सैनिकों ने महाराष्ट्र में लूटपाट व दहशत मचा रखी थी। घोड़ों पर सवार ये सैनिक जब भी किसी गाँव से होकर गुजरते तो फसलें नष्ट कर देते। भेड़-बकरियां जो भी हाथ आती, ले जाते और काटकर खा जाते। कई बार तो गरीबों की झोपड़ियां भी जला देते। लोग इन उपद्रवों से त्रस्त थे।

उस दिन होल नामक गाँव के बाहर कुछ बच्चे अपनी भेड़-बकरियां तथा गाय-बैलों को चरा रहे थे। अचानक उनका ध्यान नदी की तरफ उड़ते धूल के बादलों ने खींचा। सभी को पीछे घटित सबकुछ याद आ गया। वे डर गये। अपने-अपने पशुओं को घर की ओर हांकने लगे।

डरते क्यों हो? आज सभी मिलकर उनका मुकाबला करेंगे। बारह वर्षीय मल्हारी नाम के एक बालक की इस बात को कोई भी मानने को तैयार न हुआ।

सभी बच्चे चले गये। मल्हारी वहाँ स्थित एक पेड़ की ओट में खड़ा रहा। चार-पांच घुड़सवार तभी अचानक उसके सामने से निकले। सबसे आगे सिर पर पगड़ी बांधे उनका सरदार था। ज्यों ही वह उस बच्चे के सामने से निकला उसके मुँह पर मिट्टी के

ढेले की एक जोरदार चोट लगी। लहू-लुहान मुख लिये सरदार घोड़े से उतर गया। तब तक उसके साथी भी वहाँ आ गये। बच्चा वहाँ से भाग निकला था। सरदार ने कहा, 'आज हमारा तम्बू इसी गाँव में लगेगा।' गाँव की ओर भागते हुए बच्चे को उसने देख लिया था। यह सरदार बाजीराव पेशवा थे।

उन्होंने अपने साथियों को निर्देश दिया कि गाँव में जाओ और उस बालक को ढूंढ़कर लाओ जिसने ऐसी हरकत की है।

मल्हारी के पिता का स्वर्गवास हो चुका था। माँ उसे लेकर मायके में रह रही थी। माँ बच्चे के मुख से घटना को सुनकर घबरा गई थी। वह रो रही थी कि दो घुड़सवार आ धमके। माँ ने बेटे को पीछे छुपाना चाहा किन्तु वह आगे बढ़कर बोला– क्यों मिट्टी के ढेले से पेट नहीं भरा क्या?

वे बच्चे को पकड़कर ले जाने लगे। आगे घुड़सवार, साथ में मल्हारी तथा उसके पीछे-पीछे गाँव के बच्चे, बूढ़े, स्त्री-पुरुष माँ रोती-चिल्लाती जा रही थी।

सरदार के सामने सारी भीड़ खड़ी थी।

–तुमने ढेला मारा?– सरदार ने बच्चे से तीखा प्रश्न किया।

–हाँ–

–क्यों?–

–तुम लोग बार-बार हमारे गाँव में आकर हमारा नुकसान करते हो। हमें परेशान करते हो इसीलिए।–

बालक का निर्भीक उत्तर सुनकर सरदार सकते में आ गया। उन्होंने कहा– तुम बहादुर लड़के हो। तुमने बहुत अच्छा किया। लेकिन तुम्हारे ढेला मारने से मेरा गाल घायल हो गया जबकि मैंने तुम्हारे गाँव का कुछ नहीं बिगाड़ा।

पेशवा ने बालक की माँ तथा उसके मामा को बुलाकर कहा– आप इस बालक को हमारे हवाले कर दो। वहाँ मौजूद ग्रामवासी, माँ व मामा के साथ हाथ जोड़कर बच्चे के अपराध की क्षमा मांगने लगे।

पेशवा ने उन्हें समझाया कि उनका बालक बड़ा होनहार है। वह बहुत बड़ा बहादुर सिपाही बनेगा। इसीलिए वे उसे अपने साथ छत्रपति शाहू महाराज की छत्रछाया में ले जाना चाहते हैं। वे खुशी-खुशी बच्चे को जाने दें।

सभी को जब पता चला कि ये तो बाजीराव पेशवा हैं तो वे खुशी से उछल पड़े। आगे चलकर यह बालक बहुत बड़ा पराक्रमी तथा शूरवीर सेनापति बना।

बाल कविता : मदन देवड़ा

हम सब वृक्ष लगायें

सिंहराज ने जंगल में,
सम्मेलन एक कराया।
जिसमें शामिल होने को,
सब जीवों को बुलवाया।।

सिंहराज ने कहा– मानव ने,
आतंक है खूब मचाया।
काट-काट कर सारे जंगल,
है मैदान बनाया।।

विकट समस्या है अब सोचो,
जीवन कहाँ बितायें?
इसी विषय में आप सभी,
अपने विचार बतायें।।

एक साथ सब मिलकर बोले,
हम सब वृक्ष लगायें।
इसी समस्या को मिलजुलकर,
ऐसे दूर भगायें।।

सिंहराज खुश हुए,
और फिर व्यक्त किया आभार।
बोले– हम सब वृक्ष लगायें,
यही मूल आधार।।

कहानी : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

मैं भी बचत करूंगा

छोटू और मोटू बन्दर बहुत गहरे दोस्त थे। दोनों बहुत मेहनती थे। दिनभर मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे। लेकिन छोटू की एक आदत बुरी थी। वह जितने रुपये कमाता, सारे के सारे खर्च कर डालता था। उसका दोस्त मोटू उसे समझाता कि सारी कमाई यूं ही खर्च कर देना ठीक नहीं है। रोज की मजदूरी में से कुछ रुपये जरूर बचाने चाहिए। वक्त जरूरत काम आते हैं। लेकिन छोटू, मोटू की बातें एक कान से सुनता और दूसरे से निकाल कर कहता– यही तो जिन्दगी है प्यारे! खाओ, पियो और मौज करो। बचा-बचाकर रखने से क्या फायदा? जब तक हाथ-पैरों में जान है, हम जब चाहें और जितना चाहें, मेहनत करके कमा सकते हैं।

छोटू का दो-टूक उत्तर सुनकर मोटू चुप कर जाता।

छोटू के बेटे पिंकू का जन्मदिन आने वाला था। घर की सजावट, नये कपड़े, केक तथा मिठाई आदि पर ढेर सारे रुपये खर्च होने थे। इसलिए छोटू आज सुबह जल्दी ही, अपनी छोटी-सी पोटली में दोपहर का खाना बाँधकर काम पर निकल पड़ा। अभी वह कुछ दूर ही गया था कि अचानक उसका पैर सड़क पर पड़े एक केले के छिलके पर पड़ा और वह फिसलकर धड़ाम से सड़क पर गिर पड़ा। सड़क पर गिरते ही वह उठ न सका। राहगीरों ने उसको डॉक्टर रॉकी बन्दर के अस्पताल में पहुँचाया और उसके परिवार को सूचना दी। डॉक्टर रॉकी ने बताया कि पैर में फ्रैक्चर हो गया था। उसको ठीक करके पैर बांध दिया गया है।

यह सुनते ही छोटू के होश उड़ गए। उसने घबराकर पूछा– ऐसे कितने दिन रहना पड़ेगा डॉक्टर साहब?

–तुम्हें ठीक होने में कम से कम दो महीने लग जायेंगे।– डॉक्टर रॉकी ने बताया।

–दो महीने...?– छोटू लगभग चीखता हुआ बोला– इतने दिनों में तो दवाई पर बहुत पैसा लग जाएगा... । और फिर पिंकू का जन्मदिन भी बिना पैसों के कैसे मना सकूंगा?

तभी उसे ध्यान आया कि उसके पास तो पैसे भी नहीं हैं। फिर वह दवाइयों और घर का खर्च कैसे चलेगा? दो माह तक तो वह बिस्तर से भी नहीं उठ सकता, फिर काम कैसे करेगा? और अगर काम नहीं करेगा तो पैसे कहाँ से आएंगे?

उसे अब मोटू के द्वारा कहीं

गयी बातें याद आ रही थीं। यदि वह उसकी बात मानकर रोज थोड़े-थोड़े पैसों की बचत करता तो इस समय उसे कोई परेशानी नहीं होती। यह सोचकर उसकी आँखों में आंसू भर आए। भर्राए गले से वह डॉक्टर रॉकी से बोला– आपको देने के लिए मेरे पास इस समय पैसे नहीं हैं, लेकिन आप चिन्ता न करें। जब मैं ठीक हो जाऊँगा, तो आपके सारे पैसे चुका दूंगा।

–तुम्हें उसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम तो बस आराम करो।– अचानक मोटू बन्दर कमरे में घुसते हुए बोला– तुम्हारे ऑपरेशन और दवाई के पैसे मैंने डॉक्टर साहब को दे दिए हैं और पिंकू का जन्मदिन तो तुम्हारा यह मोटू मित्र अपने छोटू भाई के साथ ही मनाएगा।

मोटू की बात सुनकर छोटू धीरे से बोला– ठीक ही कहा गया है, जो विपत्ति में साथ दे, वही सच्चा दोस्त है। लेकिन मैं तुम्हारा यह अहसान कैसे चुका पाऊँगा दोस्त?

–अहसान तो चुकाना ही पड़ेगा प्यारे! इन पैसों के बदले मैं जो मांगू वह देना पड़ेगा।– मोटू मुस्कुराते हुए बोला।

उसकी बात सुनकर छोटू ने कहा– तुम जो भी मांगोगे, मैं वो सब दूंगा, लेकिन अभी तो मैं लाचार हूँ।

–लेकिन मुझे जो चाहिए है वह तो अभी भी तुम्हारे पास है। तुम चाहो तो अभी दे सकते हो।– मोटू हँसते हुए बोला।

उसकी बात सुनकर छोटू को बहुत आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके पास ऐसा क्या है जो मोटू अभी लेना चाहता है।

–मेरे पास वास्तव में कुछ भी नहीं है, मेरे भाई! फिर भी यदि तुम्हें लगता है कि मेरे पास तुम्हें देने लायक कुछ है तो तुम अभी उसे बड़े शौक से ले सकते हो।– छोटू ने कहा।

–तो फिर एक वचन दो कि ठीक होने के बाद तुम भी रोज की कमाई में से कुछ बचाओगे। रोज की गयी छोटी-सी बचत किसी भी समय आने वाली बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी बहुत साथ निभाती है। यह उस बचत का ही परिणाम है, जो आज मैं डॉक्टर की फीस और दवाई के पैसे दे पाया। यदि मैं भी अपनी सारी कमाई तुम्हारी तरह यूं ही उड़ा देता तो शायद तुम्हारा इलाज सम्भव नहीं हो पाता।

–इस दुर्घटना ने सचमुच मेरी आँखें खोल दी हैं मोटू! मैं समझ गया हूँ कि बचत करना कितना जरूरी है। मैं तुम्हें वचन देता हूँ दोस्त कि अब मैं भी अपनी रोज की कमाई में से थोड़ी बचत जरूर करूंगा।– छोटू ने मोटू की ओर देखकर कहा। छोटू की बात सुनकर मोटू के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। मोटू को मुस्कुराते देखकर छोटू भी धीरे से मुस्कुरा उठा।

प्रस्तुति : जगतार 'चमन'

पहेलियां

1. ऊँचा-ऊँचा जो उड़े,
न बादल न चील।
कभी डोर उसकी खींचे,
कभी पेंच में ढील।।

2. रंग-रंगीला रूप है जिसका,
फूलों पर मंडराती।
पंख हिलाती प्यार बांटती,
सब का मन बहलाती।।

3. सारा तन बालों से ढकता,
नाच तुम्हें दिखलाए।
शहद मिले तो पेड़ों पर वह,
उल्टा ही चढ़ जाए।।

4. दुपहिया पतली सी गाड़ी,
प्रदूषण से दूर है।
तन को कसरत करवाती है,
इस पर हमें गरूर है।।

5. सोने की वह चीज है,
पर बेचे नहीं सुनार।
मोल तो ज्यादा है नहीं,
बहुत है उसका भार।।

6. छोटा था तो नारी था मैं,
बड़ा हुआ तो नर।
नारी का तो कम मोल था,
नर की बड़ी कदर।।

7. सर्दी की रात में नभ से उतरू,
लोग कहते हैं मुझे मोती।
सूर्य का प्रकाश देखते ही,
मैं गायब हो जाती।।

8. बचपन तो होता है हरा-भरा,
और बुढ़ापा है पीला।
सारे फलों का राजा है यह,
सचमुच है बड़ा रसीला।।

9. है पर्वत से सागर,
तट तक काया।
अनाज और धन,
जन-मन सभी समाया।।

10. जब भी आए होश उड़ाए,
फिर भी कहते हैं कि आए?

11. आप कभी वह कुछ न खाए,
लेकिन सबको खूब खिलाए।

पहेलियों के उत्तर :-
1. पतंग, 2. तितली, 3. भालू,
4. साइकिल, 5. चारपाई,
6. अमिया-आम, 7. ओस, 8. आम,
9. नदी, 10. नींद, 11. चमचा।

अनमोल वचन

★ गुरु के मिलाप से ही प्रभु का मिलाप होता है। प्रभु रूपी धन पर जितना मान करोगे उतना ही बढ़ेगा।

★ प्यार और सत्कार का मूल स्रोत ब्रह्मज्ञान है।
– निर्मला ग्रोवर

★ मिलकर चलो, मिलकर बोलो और मनों से सही दिशा में सोचो। – ऋग्वेद

★ खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है, आगे बढ़ते रहने की लगन का।
–प्रेमचन्द

★ उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं, जिसे बनाने की शक्ति हम में न हों। – महात्मा गाँधी

★ राजा का आदर केवल अपने राज्य में ही होता है किन्तु विद्वान का सम्मान सब जगह होता है।
– चाणक्य

★ अरे आलसी! चींटी के पास जा, उसके श्रम को देख और बुद्धिमान बन। – बाइबिल

★ मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है। जितनी शरीर के लिए व्यायाम की। – थॉमस एडीसन

★ अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है। – शोपेनहावर

★ जिसमें जितना अधिक अहंकार होता है, वह उतना ही छोटा होता है। – रीमो

★ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो। – चेम्सफोर्ड

★ यदि तुम अज्ञानता के कारण भगवान को नहीं देख सकते तो इसका अर्थ यह नहीं कि भगवान नहीं है।
– रामकृष्ण परमहंस

★ तीन चीजों को कभी छोटा मत समझो– शत्रु, कर्ज, बीमारी। – अज्ञात

★ पुरुषार्थ दाएं हाथ में तो सफलता आपके बाएं हाथ में होगी। – अथर्ववेद

★ सफलता पहले से की गई तैयारी पर निर्भर है, बिना तैयारी के असफलता तय है।
– कन्फ्यूशियस

★ सफलता के लिए आवश्यक है कि सफल होने की आपकी ललक असफल होने के भय से बढ़कर हो। – बिल कॉस्बी

★ क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर बोलो।
– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

★ मनस्वी वही है, जो बीते पर आँसू नहीं बहाता, भविष्य के लिए मनमोहक सपने नहीं संजोता, अपितु वर्तमान को ही दुधारु गाय की तरह दुहता है। – गेटे

★ उल्लास का प्रमुख सिद्धान्त स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य का प्रमुख सिद्धान्त है कसरत।
– टॉमसन

★ विश्वास शक्ति है। – राबर्टसन

★ संसार ही महापुरुष को ढूंढ़ता है न कि महापुरुष संसार को। – कालिदास

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

बच्चों! पैराशूट एक वैज्ञानिक उपकरण है जिसका आविष्कार ए.जे. गार्नेरिन ने किया था।
जी, टीचर जी।
टीचर जी, पैराशूट किस काम आता है? ये तो किसी को गुब्बारे की तरह तोहफे में भी नहीं दे सकते। इसे खोलेंगे तो वो साथ में उड़ाकर ले जायेगा।
पैराशूट आपातकाल में उड़ते हुए वायुयानों से सुरक्षापूर्वक धरती पर उतरने के काम आता है।
युद्ध के समय इससे सैनिक युद्ध के मोर्चे पर भी उतर सकते हैं।
टीचर जी, पैराशूट की छतरी किसकी बनी होती है?
पैराशूट की छतरी रेशम या नॉयलोन की बनी होती है क्योंकि ये मजबूत एवं हल्का होने के कारण पैराशूट को सफलतापूर्वक उड़ने में मदद करते हैं।

टीचर जी, क्या पैराशूट गोलाकार ही होते हैं?
नहीं किट्टी! ये आयताकार और अण्डाकार भी होते हैं। साथ ही रंग-बिरंगे भी होते हैं।
बच्चों, पैराशूट से उड़ने वाले व्यक्ति को क्या कहते हैं?
टीचर जी नहीं पता! कृपया आप ही बताओ।
पैराशूट से उड़ने वाले को स्काइडाइवर कहते हैं।
जी, टीचर जी।

बच्चों, आज के समय में पैराशूटिंग एक ऐसा खेल बन गया है जिसमें स्काइडाइवर आकाश में बहुत ऊँचाई तक जाकर धरती की तरफ छलांग मारते हैं।
टीचर जी, क्या उनको डर नहीं लगता?
डर कैसा? वे पूर्ण प्रशिक्षण लेने के बाद ही ऐसा करते हैं।
टीचर जी, आपने पैराशूट के बारे में बताया। धन्यवाद!

शिक्षक दिवस पर विशेष प्रस्तुति : हरजीत निषाद

पढ़ें और बढ़ें

विद्या व्यक्ति को महान बनाती है। विद्या विनय और लगन से हासिल की जाती है। बच्चे हर रोज विद्यालय जाते हैं, शिक्षक जो कुछ सिखाते हैं उसे ध्यान से सुनते-समझते हैं। अच्छे विद्यार्थी विद्यालय से वापस आकर दिन में जो पढ़ाया गया है उसे दोहराते हैं और अगले दिन शिक्षक क्या पढ़ाने वाले हैं उसे पहले से पढ़कर जाते हैं ताकि कक्षा में शिक्षक जब पढ़ाएं तो सब कुछ ठीक से समझ में आता जाये।

उत्तर प्रदेश हायर सेकेण्डरी बोर्ड की दसवीं कक्षा में टॉप करने वाली छात्रा से जब पूछा गया कि आप इतने ज्यादा अंक लाने में कैसे सफल रहीं तो उन्होंने भी यही बताया कि शिक्षक के पढ़ाते समय ध्यानपूर्वक सुनना, समझना, घर आकर उसे ठीक से दोहराना और दूसरे दिन क्या पढ़ाया जायेगा उसे घर से पढ़कर जाना ही मेरा वह तरीका था जिसने मुझे लाखों विद्यार्थियों में पहला स्थान दिलवाया।

बच्चे प्रायः माता-पिता की बात को अनसुना करके लापरवाही करते हैं और जब परीक्षा के दिन नज़दीक आते हैं तब पढ़कर सफल होना चाहते हैं, लेकिन यह असावधानी उन्हें महंगी पड़ती है और सफलता उनके हाथ से निकल जाती है। ऐसे ही एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे। किसान कड़ी मेहनत करके खेती करता था। वह चाहता था कि उसके बेटे पढ़-लिखकर बड़े आदमी बनें लेकिन दोनों बेटे उसकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर रहे थे। वे सालभर मटरगश्ती करते रहते और परीक्षा के दिनों में ही किताबें खोलते। वे परीक्षा से पहले जरूर बहुत मेहनत करते, लेकिन सालभर की लापरवाही के चलते उनके कभी अच्छे अंक नहीं आ पाते थे। किसान ने अपने बेटों को कई बार समझाया लेकिन वे लापरवाह ही बने रहे। वे उलटा अपने पिता को उलाहना देते– आप तो खेती करते हो, आपको क्या मालूम पढ़ाई के बारे में?

किसान अपने बच्चों के इस बर्ताव से बहुत दुखी था। एक दिन उसने मन में ठाना कि वह बच्चों को सबक सिखाएगा। उसने अचानक अपने खेतों में जाना बंद कर दिया। एक दिन, दो दिन, एक हफ्ता, दो हफ्ता, इस तरह कई महीने गुजर गए। एक दिन उसकी पत्नी ने पूछा– क्या हुआ, आजकल आप खेतों में नहीं जा रहे।

किसान ने अपनी पत्नी को बताया कि बच्चों को सबक सिखाने के लिए उसे ऐसा करना पड़ रहा है, वह चिंता न करे। आखिर जब बुआई का समय आया तो किसान ने अपने बच्चों से अपने साथ खेतों में आने को कहा। दोनों बेटों को लेकर किसान खेत में पहुँचा। खेत में चारों ओर खरपतवार फैली हुई थी। जमीन सख्त होकर फटने लगी थी। खरपतवार नष्ट करने में ही सुबह से शाम हो गई। अगले दिन जमीन खोदनी थी। जमीन इतनी सख्त हो चुकी थी कि दोनों बेटों के हाथों में छाले पड़ गए। परेशान होकर वे किसान से बोले– बापू, आपने पहले खेत की ओर ध्यान दिया होता तो यह नौबत नहीं आती। अब तो इस साल फसल चौपट हो जाएगी।

किसान मुस्कुराकर बोला– "मैं तो अनपढ़ किसान हूँ। मैंने भी तुम्हारी तरह यही सोचा कि साल भर मेहनत करके क्या लाभ, जब फसल बोने का समय आयेगा मैं तभी बुआई कर लूंगा।" बेटों को पिता का सबक समझ आ गया था।

बालगीत : डॉ. सुरेश उजाला

शिक्षा

शिक्षित होकर ज्ञान बढ़ाओ।
दुनिया में विद्वान कहाओ।

शिक्षा ही है मीत हमारी,
इससे होती जीत हमारी।
शिक्षा के तुम मर्म को जानो,
अच्छा और बुरा पहचानो।।

श्रेष्ठ आदमी बनना है तो–
उत्तम शिक्षा को अपनाओ।

जीवन में कुछ करना है तो,
दूजे का दुःख हरना है तो।
तुम विज्ञान शरण में जाओ,
तकनीक–शिक्षा को अपनाओ।।

वैज्ञानिक बन जीवन में फिर।
यश अर्जित कर नाम कमाओ।

बिन शिक्षा होगा अज्ञान,
नहीं मिलेगा हमको मान।
सच्ची शिक्षा सच्चा ज्ञान,
अच्छे मानव की पहचान।।

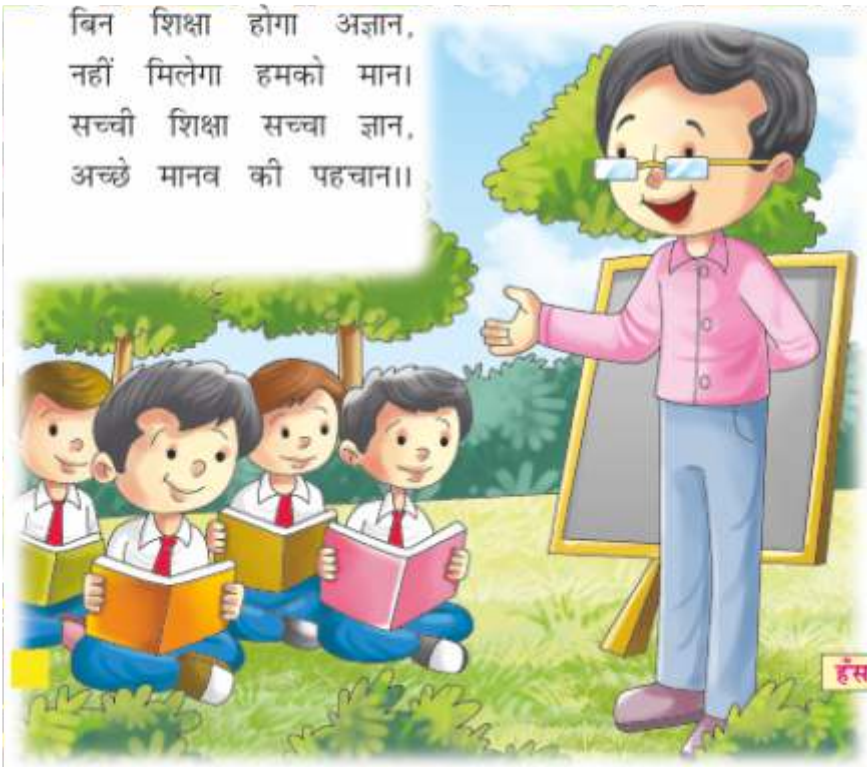

कविता : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

गुरु

गुरु देते हमें ज्ञान,
हमको रखना है ध्यान।
पाठ जो वे सिखलाते,
भूल नहीं हम कभी पाते।।

सुबह सुबह पढ़ने से याद होता,
मन में बात भली भांति जम जाती।
गुरुजी मेहनत से हमें पढ़ाते,
ज्ञान दिशा की बातें याद आतीं।।

जो कुछ गुरुजन हमसे पूछें,
झट से उसे बतलाएं।
आगे रहें हरदम कक्षा में,
उत्तर अच्छे से बतलाएं।।

माता–पिता का रोशन करना नाम,
यह है सबसे पहले हमारा काम।

लेख : डॉ. विनोद गुप्ता

मकड़ी

मकड़ियां आर्थ्रोपोडा परिवार की सदस्य हैं। विश्व में इनकी कोई 50 हजार से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। ये दुनिया के हर कोने में पाया जाने वाला जीव है।

क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि कोई मकड़ी 28 से.मी. लम्बी और 170 ग्राम भारी हो सकती है? जी हाँ, हम बात कर रहे हैं विश्व की सबसे बड़ी मकड़ी की, जिसका नाम थेराफोसा ब्लाण्डी है। यह अपने से बड़े जीव जैसे चूहे, छिपकली, मेंढक आदि को भी मारकर खा जाती है।

जहाँ तक सबसे छोटी मकड़ी का प्रश्न है, उसका नाम पाटु मारप्लेसी है, जो कि पश्चिमी समोआ में पाई जाती है। इसका आकार पेंसिल की नोंक जितना होता है।

ट्रेपडोर मकड़ियां सबसे दुर्लभ होती हैं। लिफिस्टिडम वंश की ये मकड़ियां दक्षिण पूर्व एशिया में पाई जाती हैं।

लम्बी टांगों वाली सूर्य मकड़ियां अफ्रीका और मध्य पूर्व के सूखे रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाती हैं जो 16 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ लगा सकती हैं।

मकड़ियां एक मांसाहारी जीव है, जिनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं लेकिन बाघीरा किपलिंगी नामक मकड़ी शाकाहारी होती है।

आमतौर पर मकड़ियां जाल बनाती हैं और उसमें शिकार को फांसती हैं। उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में पाई जाने वाली नफीला वंश की मकड़ियां सबसे बड़ा जाल बुनती हैं। एरियलनुमा गोलाई लिए जाल की परिधि 573 सेंटीमीटर तक नापी गई है। प्रकृति ने उनके पेट में एक थैली दी है जिसमें चिपचिपा पदार्थ होता है जिससे वह अपना जाल बनाती है।

मकड़ी का जाला बुनना उसकी कला है। पहले एक तंतु बनाकर वह लंगर की भांति दूसरी ओर उछालती है। इस प्रकार वह एक फ्रेम तैयार करके उस पर साइकिल के पहियों की तिलियों (ताड़ियों) जैसा ढांचा तैयार कर लेती है। ढांचे पर घूम-घूमकर वह इन्हें आपस में जोड़ती जाती है।

सभी प्रकार की मकड़ियां शिकार फांसने के लिए जाल नहीं बुनतीं। कुछ जमीने के नीचे रहती हैं तो कुछ फूलों में और कुछ पानी में। ये सीधे-सीधे शिकार कर भोजन प्राप्त करती हैं।

मकड़ियों का खून हमारी तरह लाल रंग का नहीं होता। उनका रक्त नीले रंग का होता है। कारण वह कि उनके रक्त में कॉपर पाया जाता है।

प्रकृति ने मकड़ियों में जहरीला डंक दिया है जिसे वह शिकार पर छोड़ती है। ज्यादातर मकड़ियां इंसानों को नुकसान नहीं पहुँचातीं लेकिन फोन्यूट्रिया वंश की मकड़ियां सबसे अधिक जहरीली होती हैं। खासतौर पर पी.फेरा का जहर सबसे तेज होता है। ये ब्राजील में पाई जाती हैं। वैसे इसके जहर की एक असरदार काट उपलब्ध है लेकिन समय पर उपचार न मिले तो व्यक्ति की जान भी जा सकती है।

जीव वैज्ञानियों के अनुसार, टैरेंटुलस व समवर्गी जातियों की मकड़ियों की उम्र सर्वाधिक होती है। 1935 में मैक्सिको में एक मादा थैरेसोफाइड मकड़ी पकड़ी गई थी जो कि 28 वर्ष तक जीवित रही।

प्रस्तुति : किशनलाल शर्मा

अस्तित्व

"पानी मत पीना।" पशुओं को पानी पीने के लिये झुकता देखकर नदी चिल्लाई।

"क्यों?" एक पशु बोला, "हमें प्यास लगी है। तुम हमें पानी पीने से क्यों रोक रही हो?"

"इस पानी को पीकर तुम मर जाओगे।"

"कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो।" दूसरा पशु बोला, "पानी पीकर कोई मरता है।"

"तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। पानी पीकर कोई नहीं मरता।" नदी बोली, "लेकिन मेरे इस पानी को पीकर तुम मर जाओगे क्योंकि इसमें जहर मिला है।"

"तुम इतनी निर्दयी कब से हो गई? नदी तो लोगों की प्यास बुझाती है और तुमने हमें अपना पानी पीने से रोकने के लिये इसमें जहर मिला दिया।" तीसरा पशु नाराज होते हुये बोला।

"मैंने अपने पानी में जहर नहीं मिलाया। मेरा तो काम है प्यासे की प्यास बुझाना। मैं तो अपने उद्गम से स्वच्छ-निर्मल-पवित्र निकलती हूँ।"

"फिर तुम्हारे पानी में जहर किसने मिलाया?" चौथे पशु ने पूछा।

"आदमी ने।"

"आदमी ने! क्यों?" सारे पशु एक साथ बोले।

"आदमी ने मेरे किनारे कारखाने खड़े कर दिये हैं। उनसे निकला अवशिष्ट पदार्थ मुझमें छोड़ा जा रहा है, जिससे मेरा पानी जहरीला हो गया है। पीने योग्य नहीं रहा।" नदी मानव के कारनामे पशुओं को बताते हुये बोली, "तुम अगर मेरे पानी को पीओगे तो मर जाओगे।"

नदी की बात सुनकर पशु सोचने लगे। आदमी हवा पानी को दूषित करके दूसरे जीवों का ही नहीं, अपने अस्तित्व को भी खतरे में डाल रहा है।

बाल कहानी : राजकुमार जैन

किसान और राजा

बहुत पुरानी बात है। एक दिन एक किसान अपना खेत जोत रहा था। उसी समय उस देश का राजा घोड़े पर सवार होकर उधर से गुजरा। किसान को देखकर राजा ठहर गया और उसने किसान से पूछा– क्यों भाई, एक दिन में तुम कितना कमा लेते हो?

किसान ने अपना हल रोकते हुए जवाब दिया– अन्नदाता, मैं पूरे दिनभर में केवल चार आने कमा पाता हूँ।

राजा ने फिर पूछा– तुम इन चार आनों का क्या करते हो?

किसान ने जवाब दिया– एक आने से मैं खाना खाता हूँ, दूसरा उधार देता हूँ, तीसरा चुका देता हूँ और चौथा कुएं में फेंक देता हूँ।

राजा कुछ समझ न सका और उसने किसान से साफ-साफ बताने को कहा।

किसान ने तब विस्तार से बताया– श्रीमान्! पहले आने से मैं अपना और अपनी पत्नी का पेट भरता हूँ, दूसरे आने से मैं बच्चों को खिला-पिला देता हूँ। जब वे बड़े होंगे और मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब वे मेरी देखभाल कर मेरा यह कर्ज चुका देंगे। तीसरे आने से मैं अपने वृद्ध माता-पिता का भरण-पोषण कर उनका कर्ज चुकाता हूँ। चौथा आना मैं किसी गरीब और असहाय को दान देता हूँ अर्थात् समाज सेवा में लगा देता हूँ। जिसके बदले में कुछ पाने की आशा मैं नहीं करता।

किसान का यह बुद्धिमत्तापूर्ण जवाब सुनकर राजा बेहद खुश हुआ और उसने किसान से कहा– जब तक तुम मेरा चेहरा एक सौ बार नहीं देख लो तब तक यह जवाब किसी को नहीं बताना। किसान ने वादा कर लिया और अपने काम में व्यस्त हो गया।

अगले दिन जब राजा अपने मंत्रियों समेत दरबार में बैठा हुआ था तब उसने अपने मंत्रियों से पूछा– अपने देश में एक किसान रहता है जो चार आने रोज कमाता है। पहला आना वह खाता है, दूसरा उधार देता है, तीसरा आना चुकाता है और चौथा आना कुएं में डाल देता है। बताइए, कैसे?

मंत्रियों ने राजा के प्रश्न पर बहुत दिमाग खपाया मगर कोई इसका उत्तर नहीं दे पाया। मंत्रियों में से एक को इस बात की भनक लग गई थी कि राजा की बातचीत कल एक किसान से हुई थी। वह मंत्री

फौरन उस किसान के पास गया और उससे जवाब मांगा।

किसान ने कहा– मैं आपको इस सम्बन्ध में तब तक कुछ नहीं बता सकूंगा जब तक कि मैं राजा का चेहरा सौ बार नहीं देख लूं इसलिए यदि आप जवाब चाहते हैं तो मुझे सौ स्वर्ण मुद्राएं दीजिए, जिन पर राजा का चित्र है। मंत्री ने किसान को सौ मुद्राएं देकर जवाब जान लिया।

अब मंत्री ने राजा के पास जाकर उसके प्रश्न का सही जवाब दे दिया। राजा फौरन भाप गया कि मंत्री को किसान ने बताया है। राजा ने किसान को दरबार में बुलवाया।

दरबार में जब राजा ने किसान से पूछा– तुमने प्रतिज्ञा क्यों नहीं निभाई?

किसान ने जवाब दिया– राजन, मंत्री महोदय को यह जानकारी देने से पहले मैंने आपका चेहरा सौ बार देख लिया था।

तब उसने राजा को सौ स्वर्ण मुद्राओं की थैली दिखाई। राजा किसान की सूझबूझ और बुद्धिमानी से बड़ा प्रभावित हुआ और उसने सौ स्वर्ण मुद्राएं अपनी ओर से भी किसान को भेंट की।

पढ़ो और हँसो

डॉक्टर : (पप्पू से) आपका वजन कितना है?
पप्पू : जी, चश्मे के साथ पूरा 75 किलो।
डॉक्टर : और चश्मे के बगैर।
पप्पू : जी, मुझे दिखता ही नहीं, क्या पता?

★ ★ ★

भिखारी : (राहगीर से) साहब! एक रुपया दे दो। दो दिनों से खाना नहीं खाया।
राहगीर : पहले यह बता कि एक रुपये में खाना मिलता कहाँ है? दोनों मिलकर खाएंगे।

★ ★ ★

अध्यापक : (विद्यार्थी से) तुम रोज खाना खाकर मुँह क्यों नहीं धोते? मैं तुम्हारा मुँह देखकर बता सकता हूँ कि आज तुमने क्या खाया है?
विद्यार्थी : बताइये सर मैंने क्या खाया है?
अध्यापक : दही बड़े।
विद्यार्थी : नहीं सर! वह तो कल खाये थे।

★ ★ ★

सेठ : (नौकर से) जरा देखना, कितने बजे हैं?
नौकर : मालिक, मुझे समय देखना नहीं आता।
सेठ : घड़ी देखकर बताओ कि बड़ी सुई कहाँ पर है और छोटी सुई कहाँ पर?
नौकर : जी दोनों सूईयां घड़ी के अन्दर ही हैं।

★ ★ ★

मोहन : (सोहन से) यार पता नहीं लोग एक-एक महीने तक बिना नहाये कैसे रह जाते हैं?
सोहन : क्यों क्या हुआ?
मोहन : क्योंकि मुझे तो बीस दिन में ही खुजली होने लगती है।

– निशा चौधरी (रिठाना कैम्प, जम्मू)

★ ★ ★

एक हवाई जहाज अमृतसर के राजासांसी हवाई अड्डे पर उतरा। सीढ़ियों से उतरते समय एक यात्री सीधा जमीन पर आ पड़ा और जमीन चूमने लगा।

जहाज का पायलट पास ही खड़ा था। वह यात्री से बोला– आपकी देशभक्ति की भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। जिस तरह आप सीढ़ियों से एकदम नीचे आकर देश की मिट्टी को चूमने लगे।

वह व्यक्ति अपना चेहरा साफ करता हुआ बोला– यह सब छोड़ो, पहले मुझे यह बताओ कि सीढ़ियों पर केले का छिलका किसने रखा था?

★ ★ ★

रिक्शावाला : आइये साहब! कहाँ चलना है?
आदमी : मैं आई.ए. नहीं बी.ए. हूँ।

★ ★ ★

यात्री : (तांगे वाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?
तांगेवाला : दस रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।
यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

दो आलसी कंबल ओढ़कर सो रहे थे। तभी एक चोर आया और कंबल लेकर भाग गया।

पहला आलसी : पड़े-पड़े बोला– पकड़ो-पकड़ो...

दूसरा आलसी : रहने दे जब तकिया लेने आएगा तब पकड़ लेंगे।

★ ★ ★

एक किसान ने खेत में जाने से पहले पत्नी से कहा– दोपहर का खाना ले आना।

पत्नी ने पूछा : कितनी रोटियां लाऊं।

किसान : साढ़े नौ।

पत्नी : दस ले आऊं?

किसान : तुमने मुझे इतना भुक्खड़ समझा है क्या?

★ ★ ★

संता ने बस में दो टिकट ली।

कंडक्टर : दो क्यों?

संता : एक खो गई तो दूसरी रहेगी।

कंडक्टर : अगर दूसरी खो गई तो?

संता : तो 'पास' कब काम आयेगा।

★ ★ ★

ग्राहक : एक किलो गाय का दूध देना।

दुकानदार : लेकिन तुम्हारा बर्तन तो बहुत छोटा है।

ग्राहक : ठीक है, तो फिर बकरी का दूध दे दो।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

बेटा : मम्मी दूध पीना है।

मम्मी : बेटा दूध तो फट गया।

बेटा : मम्मी दूध को सूई और धागे से सिल दो।

★ ★ ★

बस स्टॉप पर बच्चे को रोते देखकर कंडक्टर ने बस रोकी और पूछा– बेटे क्या हुआ?

बच्चा : मेरा दस का नोट खो गया है, अब मैं टिकट कैसे लूँगा?

कंडक्टर : चलो कोई बात नहीं, मैं तुम्हें मुफ्त में ले चलूँगा।

(बस में बैठकर बच्चा फिर रोने लगा।)

कंडक्टर : अब क्या हुआ?

बच्चा : मुझे नौ रुपये वापस चाहिए जो टिकट लेकर वापस आने थे।

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

★ ★ ★

एक बार प्रवीन पैसे जमा करने बैंक गया।

कैशियर बोला : ये नोट फटा है, दूसरा दो।

प्रवीन : मैं अपने अकाउंट में जमा कर रहा हूँ, फटा करूँ या नया तुम्हें इससे क्या मतलब है?

– अनुपमा (जैंती)

कभी न भूलो

★ शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।

★ पुस्तकें वह साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच हम पुल का निर्माण कर सकते हैं।

★ किताबें पढ़ने से हमें एकांत में विचार करने की आदत और सच्ची खुशी मिलती है।
– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

★ चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है परन्तु कलंक अपने भीतर रखता है।

★ ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते।

★ अच्छा सोचो, अच्छे कर्म करो, अच्छे इंसान बनो।

★ चरित्र इन्सान का भाग्य-विधाता है, जितना सुन्दर इन्सान का चरित्र, चाल-चलन, आचरण होगा, उतना ही सुन्दर इन्सान का भाग्य होगा।
– रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ महापुरुषों की शिक्षाओं को हम जीवन में अपनाएं तो हमारे विचार सुन्दर बनेंगे तब हम सुख और प्रसन्नता महसूस करेंगे।

★ दिमाग में भरे हुए ज्ञान का जितना अंश काम में लाया जाए, उतने का ही कुछ मूल्य है, बाकी सब व्यर्थ है। – महात्मा गाँधी

★ यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो। – आचार्य विरेन्द्र देव

★ जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारा सच्चा मित्र है। – चाणक्य

★ मुसीबतों को हँसते से झेलो, इनसे घबराना अपने काम को बिगाड़ना है। मुसीबत में ही आदमी का इम्तिहान होता हैं।
– लाला लाजपत राय

★ जिन्दगी और समय, विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक हैं। जिन्दगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है, जबकि समय हमें जिन्दगी की उपयोगिता बताता है।
– अब्दुल कलाम

★ एक बेवकूफ बिना सोचे समझे बोलता है और एक बुद्धिमान सोच-समझकर। – शिव खेड़ा

★ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाय सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। – अल्बर्ट आइंस्टीन

★ अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। वह सोने के हार को भी मिट्टी का बना देता है।
– वाल्मीकि

★ शिक्षा की जड़ें कड़वी हैं लेकिन इसका फल बहुत मीठा है। – अरस्तु

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

करते जो उपकार

सीखो मेहनत करना,
सत्य पथ पर चलना।
दूर रहो बुराई से,
पाप कभी न करना।

हिंसा, चोरी, अभिमान,
सभी पतन के द्वार।
प्रेम दया करुणा बिना,
जीवन है बेकार।

परहित करने से होता,
जीवन का उद्धार।
सफल है जीवन उसका,
करता जो उपकार।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

नन्हा पौधा बनता पेड़

नन्हा पौधा बनकर पेड़
देता है हरियाली ढेर।

फल-फूल नित हमको बांटे,
रोग-दोष सब यही छांटे।

आम-पीपल-नीम हो बेर,
देता है हरियाली ढेर।

छांव इसकी मिले भरपूर,
कभी न हो ये हमसे दूर।

पौधे लगाओ न हो देर,
देता है हरियाली ढेर।

कोमल पत्ते नरम डाली,
राग सुनाती कूहू काली।

न करो कभी इनसे छेड़,
नन्हा पौधा बनता पेड़।

जुलाई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **समीक्षा** 13 वर्ष
म.नं. 1185/13, सुन्दर नगर,
पोस्ट : एच.एम.टी. कॉलोनी,
अजमेर (राज.)

2 **यवनिका** 11 वर्ष
गाँव व डाक : भरमोटी कलां,
जिला : हमीरपुर (हि.प्र.)

3 **रजित** 13 वर्ष
ठाकुरपुरा, अम्बाला (हरियाणा)

4 **सिमरन** 14 वर्ष
606-बी, आदर्श नगर,
फगवाड़ा (पंजाब)

5 **काव्या** 12 वर्ष
765/66, गली नं. 3, अर्जुन नगर,
ओम स्वीट के पास, गुड़गाँव (हरि.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

निहारिका, लवलीन (मोहाली), एकता (तलावड़ी सर्कल, अहमदाबाद), जर्जीश (साकुर, संगमनेर), ऋतु (मुझोली, अल्मोड़ा), विवेक (तिलक नगर, इलाहाबाद), स्वर्णजीत, प्रिया (आदर्श नगर, फगवाड़ा), गुरुप्रीति (नांगलोई, दिल्ली), नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली), कनिका (डेयरी मोहल्ला, रोहतक), रिया कुमारी (बेला, नवादा), गौतम (धनपुरी, शहडोल), अंकुश (चेतसिंह नगर, लुधियाना), शगुनप्रीत (दफरपुर, मुबारकपुर), वेदांत (भायंदर ईस्ट, ठाणे), जाह्नवी (पलाही गेट, फगवाड़ा), ऋद्धम (बस्सी पठाणा), वैभव किशोर (डांगोली), सुयशस्वी (टारना रोड, मंडी), रोनित (गाँधी रोड, उल्हास नगर), साहिल, भाविका, कृष्णा, भूमि, दक्ष, यशो, अभय, परी, कबीर, मुस्कान, आर्या (गोधरा), कीर्ति यादव (पचपहरा)।

सितम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **20 सितम्बर** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **नवम्बर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

जून अंक प्राप्त हुआ। हँसती दुनिया के मुखपृष्ठ पर ही बच्चों की गर्मी की छुट्टियों का नजारा देखने को मिला कि कैसे सभी बच्चे मिलकर गर्मी की छुट्टियों का आनन्द उठा रहे हैं। यह सुन्दर पत्रिका दिन-प्रतिदिन निखरती जा रही है। स्तम्भ और लेख शिक्षाप्रद हैं। सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन बहुत प्रेरणादायक हैं। कविताएं भी बहुत बड़ी सीख दे जाती हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि यह और ऊँचाईयों की तरफ बढ़ती रहे।

–अमिता मोहन (भटिण्डा)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया मुझे व मेरे परिवार के सभी सदस्यों को बहुत अच्छी लगती है।

जुलाई अंक बहुत अच्छा लगा। इसमें 'फूल और कांटा' (अंजना त्रिपाठी) तथा 'नमक की लाज' (जगदीश कौशिक) कहानियां बहुत पसन्द आईं।

हमें हँसती दुनिया का बहुत बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित पढ़ो और हँसो भी अच्छे लगते हैं।

– प्रियंका चोटिया (हनुमानगढ़)

मैं हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करता हूँ और इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। इसमें प्रकाशित रचनाएं बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होती हैं एवं बच्चों के ज्ञान में वृद्धि करती हैं।

इसमें प्रकाशित कहानियां एवं स्तम्भ शिक्षाप्रद होते हैं। लेख भी ज्ञानवर्द्धक एवं जानकारीपूर्ण होते हैं। – सुनील कुमार (मेड़ता सिटी)

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेकों प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। हर प्रान्त की भाषा की पत्रिकाओं को बढ़ावा मिले और इनकी पाठक संख्या बढ़े इसकी जरूरत है। 'हँसती दुनिया'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी, अंग्रेजी तथा 'सन्त निरंकारी'– हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, नेपाली, उड़िया व 'एक नजर'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी लगातार प्रगति कर रही हैं। पाठक और ब्रांच स्तर पर इनके प्रोत्साहन की आवश्यकता है। वर्तमान में हँसती दुनिया, सन्त निरंकारी और एक नजर की चंदा राशि 150 रुपये एक वर्ष के लिए तथा 700 रुपये पाँच वर्ष के लिए है। कृपया आप अपनी पत्र-पत्रिकाओं की चंदा राशि जमा कराना सुनिश्चित कर लें।

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं यूं तो सभी सदस्यों को नियमित रूप से निश्चित तारीखों पर भेज दी जाती हैं। फिर भी किसी माह डाक विभाग या किसी अन्य कारण से पत्रिका न मिलने की स्थिति में कृपया पत्रिका विभाग दिल्ली को पत्र, फोन, E-Mail या 'व्हाट्सऐप' द्वारा नीचे दिए गए विवरण अनुसार सूचना दें–

पत्रिका-प्रकाशन विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल, एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

Phone : +91-11-47660200, Extn. 862
Fax : +91-11-47660300, 27608215,
Help Line : 47660360, 859,
WhatsApp : 9266629841,
Email : patrika@nirankari.org

– सी.एल. गुलाटी, प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन
सं.नि.मं., दिल्ली-110009

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011-47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)